किसकी पनाहों में...

कविता-संग्रह

लेखिका

बिमला रावर सक्सेना

अनेकता में एकता का प्रतीक

के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN-978-81-933339-9-0

के.बी.एस प्रकाशन

मुख्य कार्यालय :- 18/91-ए, ईस्ट मोती बाग, सराय रोहिल्ला, दिल्ली-110007
शाखा कार्यालय :- 61, शिवालिक अपार्टमेंट, अलकनंदा, नई दिल्ली-110019
शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटवेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301
दूरभाष :- 9871932895, 9868089950
Blogger :- https://kbsprakashan.blogspot.in
e-mail :- kbsprakashan@gmail.com

●

मूल्य : 300.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2017 © बिमला रावर सक्सेना

आवरण सज्जा :- बिमला रावर सक्सेना
मुद्रक :- कॉमपेक्ट प्रिन्टर नई दिल्ली

NAME - "Kiski Panaahon Mein"
by Bimla Rawar Saxena

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की

कविता मन की संवेदना...

साठ-सत्तर दशक के बाद जीवन और जीवन की सोच मूल्यांकन के दौर से गुज़रती है। तब हम 'स्व', 'सर्व', परिवार, समाज, देश संपूर्ण मानवता और अंततः जीवन की सार्थकता के संदर्भ में चिंता-चिंतन करने लग जाते हैं।

कालखंड की इस परिधि में जो मन में भाव उमड़ते-घुमड़ते हैं, उन्हें शब्दों में तब्दील करने की उत्कंठा बलवती होती है, बिना उसके आकार-प्रकार और व्याकरण की चिंता किए। यही अभिव्यक्ति कविता, कहानी, संस्मरण, आलेख या उपन्यास का रूप धारण करती है।

उम्र के इसी पड़ाव की अभिरुचि है, श्रीमती बिमला रावर सक्सेना का काव्य संकलन- ''किसकी पनाहों में''।

वस्तुतः बढ़ती उम्र के पड़ाव पर यह संग्रह अतीत, वर्तमान और भविष्य की समीक्षा है। प्रत्येक कविता में जीवन का मर्म छिपा है। जीवन की सार्थकता की बात उभरी है। इन कविताओं में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सरोकार, आत्ममंथन, संघर्ष के क्षणों में आत्मबल, स्त्री चेतना, प्रकृति से संवाद, बुढ़ापे का दर्द, दर्द में भी बुलंदी, 'स्व' की समीक्षा, राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य, जीवन की विवशता, प्रेम का अंतर्मन आदि-आदि भाव मुखरित हुए हैं। नदिया की धार, ओ मेरी बच्ची, बूढ़े पत्ते, यादों में बसा हुआ घर, अर्थहीन, कभी एकांत में तथा क्या नाम दूँ कविताएँ मन को छूने वाली हैं। अन्य कविताओं में भी गीत के लय का बोध होता है। जब भावना उदात्त हो तब व्याकरण और काव्य के गुण-दोष पीछे छूट जाते हैं।

इस कृति के लिए बिमला रावर जी को हार्दिक बधाई।

डॉ. अमरनाथ अमर

दूरदर्शन

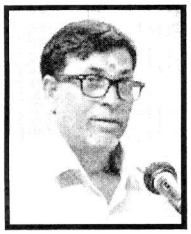

किसकी पनाहों में...

जीवन सबसे बड़ा शिक्षक होता है और उस पर भी अगर चिंतन उसमें शामिल हो, तो कविता की कसक बहुत हद तक अपने ही मन की पीड़ा लगती है। काव्य के अनेक रंग हैं और बिमला रावर सक्सेना जी की कविताओं में जीवन के रंग बहुत बार किसी चित्र की तरह बोलते हैं। पाठक उस पीड़ा को, उस ख़ुशी को अपने-अपने नज़रिये से देखता है, महसूस करता है और उसका आनंद लेता है।

बिमला रावर सक्सेना जी लम्बे समय से जीवन की बारीकियों को और अनुभूत सत्य को शब्दों के रूप में संजोकर कविताओं के माध्यम से पाठकों तक पहुँचा रही हैं। ये मेरा सौभाग्य ही है कि मैं उनकी कविताओं का पाठक, श्रोता और वाचक भी रहा हूँ। वर्तमान काव्य-संग्रह में भी बहुत-सी कवितायें मेरी सुनी-पढ़ी हैं। मेरा उनसे व्यक्तिगत परिचय है इसलिए इन कविताओं की गहराई और परिस्थितियों को मैं बहुत सहजता से समझ सकता हूँ। मैंने पाया है कि ईश्वर और देश के प्रति उनके मन में असीम श्रद्धा है। उनकी हर किताब इस बात की साक्षी है। वर्तमान काव्य-संग्रह में 'मेरा भारत रहे सलामत' कविता में भी उन्होंने इस क्रम को अनवरत जारी रखा है। वे लिखती हैं कि -

जाति धर्म भाषा सब भूले एक धर्म था आज़ादी
इसी एकता के बल पर पायी भारत ने आज़ादी

ऐसा प्रतीत होता है जैसे वर्तमान स्थिति को वह सन्देश दे रहीं हों कि हमारा असल धर्म देश है। देश जनता से बनता है और किसी की आज़ादी में ख़लल डालने पर देश की आज़ादी सुरक्षित नहीं है। बहुत ही विचारणीय उद्‌गार कहे हैं।

कहते हैं न कि जीवन चलने का नाम, ...चलते रहो सुबह शाम, वे भी जीवन में चलने का सन्देश देती हैं ताकि जीवन में हम अपनी मंज़िल को प्राप्त कर सकें।

न रुकना मंज़िल से पहले
दुर्गन्ध बिखेरता ठहरा जल
न ठहर बन्धु तू चलता चल
रख नेक इरादे अटल अचल
अविरल अविचल अविकल तू चल
मन को रख निर्मल और विमल
चल-चल तू चल तू चलता चल

क्या ये मानवता को पुनः प्रेषित सन्देश नहीं है चरैवेति-चरैवेति के समान! हर मंज़िल जीवन में तभी मिलती है, जब मंज़िल की ओर क़दम बढ़ाते हैं, ठहरने से मंज़िल कभी चलकर नहीं आती, अतः जीवन में आलस्य और निष्क्रियता का निषेध ही होना चाहिए, ऐसा सन्देश वे हम तक प्रेषित करती हैं।

जीवन का दूसरा पक्ष है- साहस। चलने का साहस, लक्ष्य की साध रखने का साहस। 'नदिया की धार' कविता में वे कहती हैं कि :-

मैं नदिया की धार
बनाने चली अपनी राह
जाऊँगी मैं जिधर
राह बन जायेगी

बिलकुल यह यात्रा बूँद के सफ़र की तरह सीप के मुँह में गिरे मोती बनने की यात्रा है। जीवन का मूल्य तो तभी पड़ता है जब हम अपनी मंज़िल को पा लेते हैं और उसके लिए ज़रूरी है, श्रम और लक्ष्य का निर्धारण ठीक नदी की तरह, जिसे एक दिन सागर हो जाना है।

जीवन के सत्य को वे अपनी एक कविता 'बूढ़े पत्ते' के रूप में हमारे सामने कुछ इस तरह रखती हैं :-

हर पीले पत्ते को टूटना है
मजबूरी है
नए पत्तों को जगह देने के लिए
उनके पनपने के लिए
पुरानों का टूटना
ज़रूरी है

जीवन के अंत में भी सकारात्मकता बनाए रखना और ख़ुशी-ख़ुशी मृत्यु की स्वीकारोक्ति का भान होना व्यक्ति को महान बनाता है। यही जीवन का अध्यात्म है कि जीवन एक यात्रा है और पीलापन पड़ाव है, इसको हमें सहजता से लेना चाहिए। यह प्रकृति का नियम है और कोई भी जीव इस नियम से बाहर नहीं है, अतः मृत्यु को उत्सव बनाते हुए परिवार से हँसते हुए विदा लेनी चाहिए।

उनकी कविताओं में प्रकृति का सौन्दर्य भी देखते ही बनता है। 'किरण सुंदरी आई' कविता इसकी गवाही देती है।

खोल दिया उषा ने घूँघट
कलियाँ मन ही मन मुस्काई
देख उषा का सुन्दर मुखड़ा
अपनी किस्मत पर इतराई
सूरज के घोड़ों के रथ पर
किरण सुंदरी सज के आई

ऐसा प्रतीत होता है जैसे शब्दों में सवेरा फूट पड़ा हो और गोधूली का समय आँखों के सामने तैर जाता है। यही तो है शब्दों से चित्र संजोने की कला। जहाँ सुमित्रानंदन पन्त के होने का आभास स्वतः पाठक के मन में आ जाता है।

जीवन की कड़वाहट और संघर्ष को मात्र दो पंक्तियों में हमारे सामने रखती हैं और लिखती हैं कि :-

रोटी ही सबसे बड़ा अर्थ है
शेष सब अर्थहीन है

इन पंक्तियों के बाद क्या सुधि पाठक से और कुछ कहने को शेष रह जाता है, जीवन के संघर्ष को बताने के लिए? हम सब इस रोटी के जाल में ऐसे उलझे हैं कि भावनायें, रिश्ते और सम्बन्ध हमने पेट की भट्ठी के हवाले कर दिये हैं, अपने जीवन को नीरस बना दिया है।

मानवीय मनोदशा का चित्रण भी उन्होंने बहुत भावपूर्ण तरीके से करते हुए लिखा है :-

जाते हैं जाने की तमन्ना तो नहीं है ,
रुक जायें मगर ऐसे तो हालात नहीं हैं

दिल चीर के दिखायें आँसू के बहाने
खो जायें होश ऐसे भी सदमात नहीं हैं

अपने आप में बहुत कुछ कहती पंक्तियाँ हैं, जहाँ उम्र और लिंग गौण हो जाते हैं और यह सब के मन की दशा का वर्णन है। 'एक बूढ़ी ख़्वाहिश' कविता बहुत ही करुणापूर्ण है।

मेरे अपने
तुम क्यों अपने सिर पर
मेरे क़त्ल का इल्ज़ाम लेना चाहते हो
तुम क्यों अपने हाथों से
मुझे हाशिये पर बैठाना चाहते हो
मैं तो वैसे ही हाशिये पर हूँ

ये जिस उम्र और मन का वर्णन है आप समझ सकते हैं, वह हर मनुष्य के जीवन में आता है और यह भावना कभी न कभी जागृत ज़रूर होती है। मुरझाये मनों को यह रचना किसी फाहे सी लगती है।

बड़ी बहिन बिमला रावर सक्सेना जी को मैं इस उपलब्धि पर अपनी हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ और उनके स्वस्थ, सक्रिय और सार्थक लेखन की कामना करता हूँ।

अनन्त शुभकामनाओं सहित!

केदार नाथ 'शब्द मसीहा'
मुख्य डिपो सामग्री अधीक्षक,
रेल डिपो कार्यालय, दिल्ली
कवि एवं लेखक

दो शब्द मेरी ओर से...

आज जीवन में साहित्य और कला के क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की कठिन परीक्षा हो रही है। जिन मानवीय जीवन मूल्यों को वे अपनी आत्मा की सम्पूर्ण दृढ़ता और गम्भीरता से प्यार करते हैं उन्हीं पर चारों ओर से घातक प्रहार हो रहे हैं। पुस्तकें पढ़ने की ओर रुचि कम होती जा रही है, विशेषतः हिन्दी कविता की ओर झुकाव कम लगता है किन्तु हिन्दी के कवि इतनी आसानी से हार मानने वाले नहीं हैं। वे पूरी ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और कर्मठता से प्रेमपूर्वक काव्य सृजन में निरन्तर लीन हैं। रास्ता लम्बा है, कठिन भी है किन्तु कविगण सभी व्यवधानों को पार करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। साहित्य समाज का दर्पण होता है और कवि अपनी कविता द्वारा देश और समाज के विभिन्न समस्याओं, अच्छाइयों और बुराइयों का वर्णन करता है, व्यवस्थाओं के प्रति अपनी कुण्ठा और आक्रोश व्यक्त करता है तथा उनके निराकरण के संकेत भी देता है। जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि।'सचमुच कवि की दृष्टि सबके हृदय को पढ़ लेती है और उसे अपना समझ कर काग़ज़ पर उतार देती है।

मैंने भाषा को क्लिष्टता से बचाने का यत्न किया तो है किन्तु यह भी पूर्ण प्रयास किया है कि हिन्दी काव्य की प्रचलित प्रांजल परिपाटी को कोई आघात न पहुँचे। संकलन में संकलित कवितायें मेरे बीते हुए छः दशकों के भंडार में से निकाली गई हैं। इनमें मेरे पन्द्रह से पिचहत्तर वर्ष तक के दशकों का चित्रण है। जीवन में जो भी अच्छे बुरे पल आते गए, मैं दूसरों के हृदय को भी समझने में अधिक सफल हो सकी और अपनी कविता में अपने अनुभवों को लिखती चली गई।

आशा है पाठकगण मेरे प्रयास को पसन्द करेंगे और मेरे इस सातवें संग्रह को पढ़ कर मुझे प्रेरणा व प्रोत्साहन देकर अनुगृहीत करेंगे।

मैं माननीय श्री अमर नाथ जी की अत्यंत आभारी हूँ कि उन्होंने मेरी पुस्तक का आमुख लिखना स्वीकार किया। अपने व्यस्त और अमूल्य समय में से उन्होंने जो समय मेरे कार्य में सहयोग देने के लिये दिया उसके लिये उनको हार्दिक धन्यवाद।

मैं अपने प्रिय कवि मित्र, छोटे भाई एवं मार्गदर्शक श्री केदारनाथ 'शब्द मसीहा' जी तथा के.बी.एस प्रकाशन के प्रकाशक श्रीमती भावना शर्मा व श्री संजय 'शाफ़ी' जी को उनके सहयोग और परिश्रम के लिए हार्दिक धन्यवाद करती हूँ।

बिमला रावर सक्सेना
बी-45, न्यू कृष्णा पार्क,
धौली प्याऊ, नई दिल्ली-110018
दूरभाषः- 011-25533221

अनुक्रमांक

मेरा भारत रहे सलामत	15	39	क्यों हम लोग
अविरल अविचल तू चलता चल	17	40	काश! ये राजनेता
अपने पास	18	41	रोज़ एक ख़ुशी
नदिया की धार	19	42	कल होली खेली
आ मेरी बच्ची	20	43	आदर्शों की परिभाषा
मैं निकल पड़ी	21	44	पूरी मौत
बूढ़े पत्ते	22	45	हमें जी-जी कर जीना है
यादों में बसा हुआ घर	23	46	कैसे
किरण सुन्दरी आई	24	47	खण्डहर को घर बनाने के लिये
अर्थहीन	25	48	कहीं कोई अपना न कोई पराया
कभी एकान्त में	26	49	मिलेगी न शान्ति
कैसे सावन कहलाओगे	27	50	अब नहीं आयेंगे
सार्थक दृष्टिकोण और मंज़िल	28	51	दुविधाओं के घेरे में
ठोकर मिली ज़माने से	29	52	प्रश्न ज्यों के त्यों हैं
दस्तक अतीत की	30	53	अमीर खुसरो से सीखा
हम भूल गये उन वीरों को	31	54	क्यों दुनिया में आने न दिया
एकता का हो रहा जागरण था	32	55	स्वाति की बूँद
कौन किसका ?	33	56	दिल के ख़ज़ाने
एक सी ख़बरें	34	57	करो हिम्मत ज़रा
बदल जाते हैं	35	58	हालात
तथाकथित अपने	36	59	कैसी प्यास
प्रकृति सुन्दरी	37	60	मेरा दीपक
नीचे अगर गिरोगे	38	61	तेरी आँखें

एक नया मोड़ 62
फूलों से बात करो 63
झाँके मनभावन 64
महक 65
एक बूढ़ी ख़्वाहिश 66
कुछ खो गया है 67
उधार या भिक्षा 68
किसकी पनाहों में 69
ज़िंदगी के साज़ 71
काला शून्य 72
ख़ुद को मैं ठगता गया 73
इक झोंका ही था 74
गीत 75
यादों की गन्ध 76
मेरी हँसी पुरानी 77
ख़ुद को आज़ाद करो 78
तेरी यादों के सहारे 79
ये कैसी कहानी 80
राजनीति के खेल 81
जीने की आज़ादी 83
कुछ सफे 84
जीवन का निचोड़ 85
उसे काम पर जाना है 86
किस्मत और हिम्मत 88
सड़क जड़ होकर भी 89
मीठी पुरवाई 90
वह सोचता है 91
ख़ामोश गूँज 92
सौदा यादों का 93
सुबह को आना ही है 94
जीवन का दर्शन संघर्ष 95
आज के राधा-कृष्ण 96
कहाँ जायें 97
एक पत्र माँ की ओर से 98
दिल में छुपा बच्चा 102
दिल न क़ाबू में आया 103
कब आओगे साँवरिया 104
कोई उद्‌गार न होता 106
बढ़ जा अकेला 107
सुना है 109
तार के तार 110
क्या नाम दूँ 111
यादों के पल 112
आस्था के पुष्प 113
कुछ निशानियाँ 114
लहरें ही लहरें 115
अगर सोचते हो वक़्त... 116
आकर्षण 117
मोल-तोल की भाषा 118
बदलनी होगी दृष्टि 119

कहतीं हाथों की रेखायें 120
पंख फैला कर यूँ नाचे 121
इत्तिफ़ाक ग़ज़ब का था 122
मुझे आधार देना 124
मिले जो तू 125
हाँ, मैं विस्मित हूँ 126
है कितनी अटपटी ज़िंदगी 127
यही वर्तमान 128
तब आयेगा नया प्रभात 129
बादल कितने रूप तुम्हारे 130
दुनिया के मेले 133
आश्रय 134
ना तुम जानो ना हम जानें 135
मीत कोई गीत गाओ 136
वक़्त के साथ 137
हँसे हम पर किस्मत हमारी 138
हर दिशा खो गई 139
धागा प्रेम का 140
मैं मुखौटा लगाकर 141
पूजी जाती है नारी जहाँ 142
बचपन का वो अम्मा का घर 143

मेरा भारत रहे सलामत

मेरे भारत के भविष्य के पन्नों पर
इक नई इबारत लिख दो मेरे भारतवासी
हम थे कभी गुलाम भूल कर
आज गढ़ेंगे नई इमारत भारतवासी
युग-युग तक यह रहे सलामत
करो प्रतिज्ञा भारतवासी
रहे ईश की सदा इनायत
करो प्रार्थना भारतवासी
शपथ आज हम सब हैं लेते
सदा चलेंगे सच्चाई पर
सच की राहों पर चल कर ही
पहुँचेंगे हम ऊँचाई पर
आज़ादी के लिये हमारे पुरखों ने बलिदान दिये
भारत की महिलाओं ने पति, पिता, पुत्र, कुर्बान किये
कष्ट सहे पर झुके नहीं मेरे भारत के वीर महान
चाहे सिर कट जाये लेकिन झुके नहीं निज ध्वज की शान
जाति धर्म भाषा सब भूले एक धर्म था आज़ादी
इसी एकता के बल पर पाई भारत ने आज़ादी
हुआ विभाजन मातृभूमि का गाँव घरौंदे सब छूटे
पर सपूत भारत माता के न घबराए न टूटे
दिल में लेकर देश प्रेम इक नई राह पर निकल पड़े
रात दिवस करते थे परिश्रम नन्हे बच्चे और बड़े
सबकी मेहनत रंग लाई दिन बदल गये भारत माँ के
बने घरौंदे नये-नये लहराये खेत मेरी माँ के

फिर औद्योगिक युग आया अद्‌भुत विकास का युग आया
धीरे-धीरे स्वर्णिम प्रभात सी फैल रही सुख की माया
लेकिन यह किस की नज़र लगी मेरी माँ के सुख सपनों को
कैसी ज़हरीली हवा चली जो बाँट रही है अपनों को
कुछ नेता वोटों की ख़ातिर जनता का शोषण करते हैं
उलझा जनता को बातों में वे ख़ुद का पोषण करते हैं
धर्म और जाति के चक्कर में उलझाये रखते जनता को
कभी भाषा पर कभी पानी पर बहकाये रहते जनता को
कोई निज स्वार्थ में डूब रहा कोई मेहनत से ऊब रहा
कोई कुर्सी से चिपक-चिपक निज पद के मद में झूम रहा
कोई रिश्वत ले हुआ भ्रष्ट या डूब नशे में हुआ नष्ट
उससे भी चैन न आया तो मदहोश हुए खा-खा के ड्रग्स
कुछ तो इनसे भी बढ़ कर हैं जो जयचंद ही बन जाते हैं
जो अपने भारत के रहस्य दुश्मन को जा पहुँचाते हैं
तज कर अनुशासन नैतिकता वे बने स्वार्थ में अन्धे हैं
भारत माता के बेटों के कैसे दुखदाई धन्धे हैं
ईश्वर से एक यही विनती ऐसे लोगों को दे सुबुद्धि
उनके शुभ कर्म होयें जागृत हो जाये उनकी हृदय शुद्धि
भारत माता के बेटों को
प्रभु एक यही वर दे देना
माता की इज़्ज़त की ख़ातिर
ध्वज को न कभी झुकने देना
हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
चाहें तुझसे यही इनायत
अपने भारत के भविष्य की
आज गढ़ें मज़बूत इमारत
युगों-युगों तक मेरा भारत
रहे सलामत रहे सलामत

❄❄❄

अविरल अविचल तू चलता चल

चल-चल तू चल तू चलता चल
रुकना न कभी तू बढ़ता चल
अविरल अविचल चल चलता चल
घुल जा प्रकृति के रंगों में
गा गीत नई उमंगों में
पथ के साथी को मत तजना
सब तज देना शिकवे या गिले
जब बन जायेंगे सब अपने
पूरे हो जायेंगे सपने
भगवान मदद करते उनकी
जो अपनी मदद ख़ुद करते हैं
जो ख़ुद से किए गये वादे
हिम्मत से पूरे करते हैं
करना न कभी झूठे वादे
पर जीवन में कुछ ऐसा करो
जो बन जायें मीठी यादें
चलने से ही मिलती मंज़िल
न रुकना मंज़िल से पहले
दुर्गन्ध बिखेरे ठहरा जल
न ठहर बन्धु तू चलता चल
रख नेक इरादे अटल-अचल
अविरल अविचल अविकल तू चल
मन को रख निर्मल और विमल
चल-चल तू चल तू चलता चल

❋❋❋

अपने पास

अपने से भाग कर कोई
कैसे चैन पायेगा
कब तक दौड़ेगा
कहाँ तक भागेगा
किससे कहेगा
किसके पास जायेगा
लौट कर फिर यहीं
अपने पास आयेगा
क्यों खो रहे हो ख़ुद को
भूत भविष्य और वर्तमान में
क्या खो चुके हो
क्या पा रहे हो
किसकी आशा में
कुछ ढूँढते हो आसमान में
कहाँ जाना है
कहाँ ठहरना है
कौन सी राहों पर
किन पगडण्डियों से
तुमको गुज़रना है
जान लो इस सत्य को
वापिस यहीं आना है
शुभ-अशुभ
आशा-निराशा
चिन्ता चंचलता
सफलता विफलता
सबका सार तुम्हें
अपने अन्दर ही पाना है

❄❄❄

नदिया की धार

मैं नदिया की धार
बनाने चली राह अपनी
जाऊँगी मैं जिधर
राह बन जायेगी
अब उतर पड़ी हूँ मैं
पर्वत की चोटी से
उछल कर चली
मचल कर चली
कूद कर चली
जिधर चाह मन आयेगी
रोक न पायेंगे मुझको
कोई खाई खन्दक पत्थर
देता जायेगा राह मुझे
जो आयेगा मेरे पथ पर
है लक्ष्य सामने एक अगर
तो कोई बाधा रोक न पायेगी
जाऊँगी मैं जिधर
राह बन जायेगी

❄❄❄

आ मेरी बच्ची

मेरे जन्म लेते ही
घर में एक सन्नाटा सा छा गया था
धीरे-धीरे एक अनमने भाव से
सबने उस सन्नाटे को स्वीकार लिया
पर न जाने क्यों
माँ की आँखों में
यह सन्नाटा स्थाई घर बना कर बस गया
माँ ने एक आह ली और कहा-
ऐसा सन्नाटा तेरे जीवन में कभी न आये
वक़्त ऐसे बदल जाये कि-
बेटी के जन्म लेने पर
वैसे ही खुशियाँ मनाई जायें
जैसी बेटे के जन्म पर मनाई जाती हैं

❄❄❄

मैं निकल पड़ी

मैं निकल पड़ी
मैं निकल पड़ी
मैं विस्तृत जग में निकल पड़ी
मैं अम्बर तक भी उड़ आई
चारों दिशाओं से मुड़ आई
मैं खुली हवाओं में उड़ कर
प्रकृति को आँचल में भर कर
नदियाँ सागर पर्वत जंगल
वादी घाटी सुन्दर उपवन
कुदरत के सारे रंगों को
अपनी बाहों में भर लाई
कितने ही चित्र बना डाले
कितने ही गीत सुना डाले
जब सरसराई बाँसों में हवा
जब फड़फड़ाई पातों में हवा
तब मेरा दिल भी बहक गया
तब तन मन सारा महक गया
चंदा सूरज जुगनू तारे
भर लाई सबसे उजियारे
जलचर थलचर नभचर सबसे
बातें कर आई बड़ी-बड़ी
मैं निकल पड़ी मैं निकल पड़ी
मैं विस्तृत जग में निकल पड़ी

❄❄❄

बूढ़े पत्ते

जब भी मैं अपने पौधों के
पीले बूढ़े पत्तों को तोड़ती हूँ
लगता है जैसे जीवन को
मृत्यु की ओर मोड़ती हूँ
आँखों के सम्मुख
एक चित्र झूम जाता है
बचपन जवानी बुढ़ापा
एक साथ घूम जाता है
क्या अन्तर है पेड़ों के पत्तों और इन्सान में
कोई भी उनकी जर्जरता, पीतावस्था
झुके मुड़े कन्धों को
सहेजना नहीं चाहता
सहलाना नहीं चाहता
उनके अपने भी
उनसे छूट जाना चाहते हैं
शायद वे भी अपनों की ख़ातिर
अपनी डाल से टूट जाना चाहते हैं
हर पीले पत्ते को टूटना है
मजबूरी है
नए पत्तों को जगह देने के लिये
उनके पनपने के लिये
पुरानों का टूटना
ज़रूरी है

❄❄❄

यादों में बसा हुआ घर

कहाँ खो गया प्यारे बचपन का
वह प्यारा घर
जिसकी दीवारें गाती थीं
बतियाती थीं
खिड़की दरवाज़े
हर आते-जाते क़दम के साथ
हँसते थे मुस्कुराते थे
हर कोने की अपनी एक कहानी थी
किसी कोने में कोई डाँट खा कर छुपा था
किसी में कोई 'मुझे ढूँढो' कह कर हँसा था
कोई कोना पापा की छड़ी का था
कोई छतरी का कोई घड़ी का था
एक था माँ का पूजाघर, एक रसोईघर
जिनकी ख़ुशबू आज भी
मेरी यादों में महकती है
वो दीवारें जो हर रंग की तस्वीरों को
मेरे बनाये चित्रों की लकीरों को
मेरे कपड़ों और किताबों की अलमारियों को
अपनी छाती से चिपकाए रखती थीं
जो मेरे साथ रोती थीं मेरे साथ हँसती थीं
मेरे आँगन का पेड़ और झूले
कैसे मेरा मन उन यादों को भूले
बहुत कुछ छूट गया
बहुत कुछ बदल गया
नहीं बदला तो सिर्फ़
मेरी यादों में बसा हुआ घर
कहाँ खो गया वो घर

❄❄❄

किरण सुन्दरी आई

खोल दिया उषा ने घूँघट
कलियाँ मन ही मन मुसकाईं
देख उषा का सुन्दर मुखड़ा
अपनी किस्मत पर इतराईं
सूरज के घोड़ों के रथ पर
किरण सुन्दरी चढ़ कर आई
नदियाँ सागर पर्वत घाटी
सब पर अपनी छटा दिखाई
चमकीली चादर फैला कर
रंग भरा है हर जीवन में
नवल उमंग तरंग लिये
आनन्द भर दिया है कण-कण में
मंद समीर सुवर्ण उषा की
झुला रही फूलों को झूला
देख-देख स्वर्गीय दृश्य को
सहृदय जन है सब कुछ भूला
पुष्प गुच्छ पर भ्रमरों का दल
गुन-गुन-गुन गुन्जार रहा है
मानो आश्रम में शिष्यों का
झुण्ड श्लोक उच्चार रहा है
नया सवेरा ला उषा ने
नव जीवन आधार दिया है
सृष्टि के कण-कण में देखो
जीवन का संचार हुआ है

❊❊❊

अर्थहीन

अर्थव्यवस्था
आर्थिक ढाँचा
आर्थिक स्थिति
अर्थशास्त्र
कितने भारी-भारी
अर्थपूर्ण शब्द हैं
किन्तु एक भूखे पेट के लिए
दुनिया के किसी शब्द का अर्थ
रोटी के अतिरिक्त
कुछ नहीं है
शेष सब कुछ व्यर्थ है
तत्वहीन है
अर्थहीन है
गतिहीन है
मतिहीन है
रोटी ही सबसे बड़ा अर्थ है
शेष सब अर्थहीन है

❄❄❄

कभी एकान्त में

बन्धु
कभी अपने जीवन के कुछ पल
अपने लिये भी चुरा लिया करो
कुछ क्षण के लिये
अपने आस-पास के पर्दे गिरा लिया करो
उन पर्दों के पीछे अकेले में
ख़ुद से
एक प्यारी सी मुलाकात किया करो
सबकी बातें सुनते हो
सबसे बातें करते हो
कुछ देर के लिये
ख़ुद से ही बतिया लिया करो
तुम्हारे दिल का भी तुम पर
थोड़ा सा अधिकार है
कभी एकान्त में
उसकी बात भी सुन लिया करो
सबसे रिश्ता निभाते हो
ख़ुद से ख़ुद का रिश्ता
क्यों भूल जाते हो

❊❊❊

कैसे सावन कहलाओगे

बरसो सावन सरसो सावन
उमड़ घुमड़ कर बरसो सावन
धरती का तन दरक रहा है
जन-जन का मन कसक रहा है
उफ़ किसान आकाश ताकता
क्षण-क्षण में खिड़की से झाँकता
शायद अब आ जायें बादल
नाच उठे गोरी की पायल
जो तुम अब भी न आओगे
कैसे सावन कहलाओगे
जब मन को ही न भाये तो
कैसे मनभावन कहलाओगे

मोर बाग में न नाचेगा
दादुर कथा नहीं बाँचेगा
पेड़ों पर पींगें न पड़ेंगी
झूलों पर गोरी न उड़ेंगी
कालिदास के मेघदूत को
कौन पुकारेगा फिर सावन
न बिरहिन बिरहा गायेगी
अभिसारिका न होगी घायल
सावन का रिमझिम फुहार में
कैसे नाचेगी फिर पायल
सर्दी ग़र्मी पतझड़ जैसे
तुम भी बन जाओगे सावन
हरियाली तीजें न आयेंगी
न होगा हरियाला सावन
अब तो उमड़ घुमड़ कर आओ
बरसो सावन सरसो सावन

❄❄❄

सार्थक दृष्टिकोण और मंज़िल

कमज़ोर पैरों से
डगमगाते क़दमों से
मंज़िल तक कैसे पहुँच पाओगे
सहमी आँखें
धड़कता दिल
थरथराते होंठ
कैसे ले पायेंगे
ज़िंदगी के सही फ़ैसले
बन्धु-
एक दृढ़ इच्छाशक्ति
कुण्ठा और निराशा से विरक्ति
जीवन के प्रति सार्थक दृष्टिकोण
आत्मविश्वास से पूछो ख़ुद से
मैं हूँ कौन
जिस दिन ख़ुद से
साक्षात्कार हो जायेगा
कमज़ोर और डगमगाते पैरों में
जीवन शक्ति का संचार हो जायेगा
एक नव चेतना भर जायेगी
मंज़िल ख़ुद चल कर
पास आ जायेगी

❊❊❊

ठोकर मिली ज़माने से

कभी अपनों ने लगाई
कभी बेगानों ने
हमको ठोकर ही लगाई
बेवफ़ा ज़माने ने
ग़ैर तो ग़ैर ही होते हैं
पर कभी तो अपने भी
दे जाते हैं मात
वादा करते हैं हाथ पकड़ कर चलने का
वक़्त पड़ते ही खींच लेते हैं हाथ
जो भँवर में फँसाना चाहते हैं
वो कैसे पहुँचायेंगे साहिल तक
जो गड्ढा खोद कर दूसरों को
नीचे गिराना चाहते हैं
वे कैसे पहुँचने देंगे मंज़िल तक
पीछे खींच लेंगे हमें
किसी बहाने से
कभी न लेने देंगे चैन
चिन्ता देते रहेंगे दिन रैन
उड़ा देंगे नींद किसी बहाने से
न भरने देंगे रंग
बेरंग जीवन में
कभी न आने देंगे ज़िंदगी में
कुछ दिन सुहाने से
कभी अपनों ने लगाई
कभी बेगानों ने
हमको ठोकर मिली ज़माने से

❄❄❄

दस्तक अतीत की

क्यों कभी-कभी
अतीत सामने नाचने लगता है भविष्य बन कर
इतिहास स्वयं को दोहराता है अदृश्य बन कर
विडम्बना है जीवन की
जीवन के जिन सन्दर्भों को
बन्धन की जिन डोरियों को
उनसे बँधे नाते रिश्तों को
हम भूलने का यत्न करते हैं
तोड़ने का प्रयत्न करते हैं
अतीत और भविष्य की चिन्ता तज कर
केवल वर्तमान में डूबने का भुलावा
देते हैं अपने मन को कैसा छलावा
पर छलिया तो कहीं अदृश्य से
हम कठपुतलियों की डोरी खींचता है
मुस्कुरा-मुस्कुरा कर
हर बीते क्षण की डोरी हिलाता है
और अतीत का लम्हा-लम्हा
क़तरा-क़तरा सीधा
बढ़ता है अतीत से भविष्य की ओर
फिर अचानक से एक दिन
अतीत आ कर खड़ा हो जाता है
भविष्य के सपनों में नहीं
अपितु वास्तविकता बन कर
हमारे सामने
शायद यह स्थिति
सबके जीवन में एक बार दस्तक देती है

❊❊❊

हम भूल गये उन वीरों को

हम भूल गये उन वीरों को
जो लगे उन्हें उन तीरों को
वो वीर जिन्होंने मातृभूमि के लिये
प्राण बलिदान किये
भारत की ज्योति जलाने को
निज बुझा दिये जीवन के दिये
जो न्यौछावर कर गये प्राण
भारत के वीर सपूतों को
जिनके बलिदानों से पाई
आज़ादी उन रणधीरों को
यह हुआ आजकल क्या सबको
सब पड़े स्वार्थ के चक्कर में
सब लालच में दीवाने हैं
हीरा ढूँढे हर कंकर में
हों रातों रात अमीर धनी
पाले अरमान अनोखे हैं
वे नहीं जानते जीवन में
कितनी बेईमानी धोखे हैं
अपने इस लालच में फँस कर
आघात देश पर करते हैं
रिश्वत चोरी डाके जैसी
न किसी बात से डरते हैं
ईश्वर का डर और नैतिकता तो बेकार की बातें हैं
कुछ कुर्सी के ऊपर खाते कुछ उसके नीचे खाते हैं
पुरखों ने हमारे क्या ऐसे भारत के सपने देखे थे
इन देशद्रोही जयचंदों में क्या बच्चे अपने देखे थे
कोयले की काली दलाली में हम भूल गये उन हीरों को
न्यौछावर जो कर गये प्राण भारत माँ के उन वीरों को

❄❄❄

एकता का हो रहा जागरण था

नेता जी ने नोट दिये
वोटर जी ने वोट दिये
दोनों का बना काम
रिश्ते को मिला नाम
ख़ुशी का बजा बाजा
एक बनी प्रजा एक बना राजा
जल्दी ही आ गया होली का त्यौहार
नेता जी के मन में आये सुन्दर-सुन्दर विचार
सोचा अपनी प्रजा के साथ मनायें त्यौहार
लुटा दें उन पर थोड़ा सा प्यार
निमन्त्रण था शुद्ध श्वेत वस्त्रों में आने का
अपनी पसंद का रंग अपने साथ लाने का
एक ऊँची कुर्सी पर नेता जी थे विराजमान
पंक्तिबद्ध आगे आ रहे थे सारे मेहमान
नेता जी के आगे रखा था पानी से भरा बड़ा सा ड्रम
जिसमें लोग रंग डाल रहे थे कोई ज़्यादा कोई कम
एक लम्बे डण्डे से रंग चलाया गया
सबके प्यारे रंगों को साथ-साथ मिलाया गया
प्रेम का कितना सुन्दर उदाहरण था
एकता का हो रहा जागरण था
अब नेता जी ने उठाई मोटी सी पिचकारी
भर-भर कर सब पर मोटी सी धार मारी
सब रंग मिल कर बन गया रंग काला
श्वेत वस्त्र हो गये काले खो गया उजाला
नेता जी रहे ऊपर से श्वेत अन्दर से काले
लोंग थे अन्दर से श्वेत ऊपर से काले

❄❄❄

कौन किसका ?

ज़िंदगी दर्द का फ़साना है
दर्दे दिल अब किसे सुनाना है
चंद लम्हे गुज़र ही जायेंगे
लौट कर फिर तो हम न आयेंगे
हम अकेले बुरा ज़माना है
ग़म के दरिया में डूबे जाते हैं
हम तो ख़ुद ही से ऊबे जाते हैं
हाले ग़म फिर किसे सुनाना है
दिल है तनहा, ये ज़िंदगी तनहा
हम हैं तनहा, हमारे ग़म तनहा
कौन किसका किसे बुलाना है
आसमाँ दूर बहुत दूर हमारा हमसे
जीना तो सिर्फ़ जीने का इक बहाना है
ज़िंदगी दर्द का फ़साना है
हम अकेले बुरा ज़माना है
हाले दिल फिर किसे सुनाना है

❄❄❄

एक सी ख़बरें

रोज़ कुछ एक सी ख़बरें
अख़बार में छपती हैं
इन ख़बरों से अख़बार का
काफ़ी हिस्सा काला होता है
इन ख़बरों में थोड़ी सी सच्चाई
और बहुत सा नमक मिर्च गरम मसाला होता है
अख़बार के पन्नों में सब मसालों की
अपनी-अपनी जगह निश्चित है
पहला पृष्ठ बड़े-बड़े राजनेताओं उद्योगपतियों
या करोड़पतियों के कारनामों को आवंटित है
आगे के कुछ पन्नों में ठगी फिरौती चोरी तस्करी
बलात्कार और असली नकली प्रेमियों की मसखरी
आत्म-हत्या और हत्या के नये-नये तरीकों की ख़बरें
कैसे-कैसे लोग एक-दूसरे के पर कतरें
ढेर से विज्ञापनों से भरा एक किलो काग़ज़ अलग
बीच-बीच में कहीं-कहीं कोई काम की ख़बर
ठीक वैसे ही जैसे टी.वी. में
विज्ञापनों के बीच-बीच में आती
किसी कहानी के टुकड़े
कौन दिखाये किसको अपने दुखड़े
कौन कितना सच है कौन कितना झूठ
चारों तरफ़ तो मची है बेईमानी और लूट
साथ में ढेर सी होती हैं
फ़िल्मी चाशनी में लिपटी ख़बरें
छपती हैं अख़बार में
रोज़ कुछ एक सी ख़बरें

❄❄❄

बदल जाते हैं

हालातों के बदलने से इन्सान बदल जाते हैं
देखते-देखते पल भर में ईमान बदल जाते हैं
दिल बदल जाते हैं दिलदार बदल जाते हैं
दर्दो ग़म आदमी की जात बदल जाते हैं
सोच खो जाती है व्यवहार बदल जाते हैं
बातों-बातों में आदमी के ख़्यालात बदल जाते हैं
सुनत-सुनते किसी की बात वो गुम हो जाता है
न अपनी कह पाता न किसी की सुन पाता है
ज़िंदगी के उतार चढ़ाव तो चलते रहते
पर वो आदमी नहीं जो पल में ज़ुबान बदल जाते हैं
दुख और सुख तो भगवान के खिलौने हैं
खेलता रहता है इन्सान के साथ बड़ी शान से जिनसे
पर सोचने की ताक़त भी उसी ने दी है सबको
वो इन्सान नहीं जो ख़ुद को दिन रात बदल जाते हैं

❄❄❄

तथाकथित अपने

कभी-कभी कुछ तथाकथित अपने
जब बड़े प्यार से बात करने लगते हैं
तो मैं डर कर सहम जाती हूँ
इन मधु मिश्रित बातों के साथ आने वाली
किसी नई माँग की भूमिका को
पहचान जाती हूँ
माँग पूरी कर दी क्या ख़ास किया
वह तो मेरा फ़र्ज़ है
न पूरी कर सकी तो क्या होगा
उस प्रतिक्रिया को याद करके
मैं सहम जाती हूँ
और उन प्यार भरी बातों से
घबरा जाती हूँ

❊❊❊

प्रकृति सुन्दरी

ऊपर विस्तृत नीला अम्बर
नीचे नीला सागर
झूम रही है प्रकृति सुन्दरी
ओढ़े नीली चादर
चाँद सितारे टँके हुए हैं
इस नीली चादर में
चमक रही जिसकी परछाई
इस नीले सागर में
सप्त अश्व वाला रथ ले कर
आर्यमान भी आए
सतरंगी किरणों से आकर
सबके दिवस सजाए
विहँस रही है उषा सुन्दरी
सूर्य किरण से सजकर
सागर की लहरों पर नाची
मचली थिरक-थिरक कर
झिलमिल-झिलमिल अम्बर झलके
झिलमिल-झिलमिल सागर
नृत्य कर रही प्रकृति सुन्दरी
ओढ़े नीली चादर

❋❋❋

नीचे अगर गिरोगे

ऊँची उड़ान भर कर नीचे अगर गिरोगे
ऐसा लगेगा धक्का गिर कर न उठ सकोगे
यश मान और दौलत तो चार दिन के चेले
ये तो लगाते रहते हैं हर जगह पे मेले
मेले में खो गये तो भटकोगे दूर जाकर
शायद मिलें कभी न अटकोगे दूर जाकर
तुम अपने सन्तुलन को कायम हमेशा रखना
धन मान और यश में ख़ुद से भी मिलते रहना
ख़ुद से अगर मिलोगे धरती से भी जुड़ोगे
गर छोड़ दोगे धरती तब तो बहुत उड़ोगे
पर बहुत तुझे ऊँचे उड़ कर धरती पे जब गिरोगे
धरती या आसमाँ को अपना न कह सकोगे
जो भी है ख़ुद को भुला फिर लौट कर न आया
आया अगर तो अपना सब कुछ लुटा के आया
दौलत समय-समय पर है अपना घर बदलती
कभी है तुम्हेंरे घर में कभी और के मचलती
गर तुम हमेशा ख़ुद को धरती पे रख सकोगे
तो गिर भी जाओगे तो पैरों पे उठ सकोगे

❋❋❋

क्यों हम लोग

क्यों हम लोग
आग को फूलों की तरह सहला कर
हाथ झूलसा लेते हैं
क्यों हम जानबूझ कर
होम करते हाथ जला लेते हैं
जानते हैं कीचड़ में पत्थर फैंकने से
छींटे ख़ुद पर ही आयेंगे
फिर भी क्यों हम
आ बैल मुझे मार का उपक्रम कर लेते हैं
यह मानव की नियति है
या भगवान का मज़ाक
अक्सर कुछ लोग
भला करने जाते हैं
बुरे बन कर लौट आते हैं
अक्सर प्यार करने की ख़ता करते हैं
चोट खा कर आ जाते हैं
शायद कुदरत ने इन्सान के लिये
फूल कम और काँटे ज़्यादा उगाये हैं
तभी तो उसने चाँद के चेहरे पर भी
दाग़ लगाये हैं

❄❄❄

काश! ये राजनेता

हे भगवान- राजनीति के रंगमंच पर कैसे-कैसे ड्रामे हैं
बड़े-बड़े से नेताओं के बड़े-बड़े कारनामे हैं
कहते हैं ये देश के कर्णधार हैं
सचमुच कानून की कई धारायें इनकी आधार हैं
इसीलिये इनमें से कुछ कार में कुछ कारागार में हैं
कुछ आन-बान-शान में कुछ शयनागार में हैं
निकलते हैं कभी-कभी माँगने को वोट
जिनके सहारे पाँच वर्ष तक छापेंगे नोट
जिनके पीछे रात दिन रक्षक तैनात हैं
वो जनता की रक्षा कैसे करेंगे अचरज की बात है
अपने हिस्से की राजनीति में पूरे पारंगत हैं
यह तो बताती उनके चेहरे की रंगत है
पर जनता के लिये क्या करना इससे पूरे अनजान हैं
समझते वो खुद को शाही मेहमान हैं
मेहमान सेवा करते नहीं सेवा करवाते हैं
जनता के साथ बस इनके इतने ही नाते हैं
काश ये नेता अपना कर्त्तव्य समझ कर
जनता के लिये करते काम तो ये मेहमान न रहते
जनता के हृदय में बन जाता इनका धाम
जनता इन्हें सिर आँखों पर बैठाती
बार-बार वोट देकर इन्हें बुलाती
तब न इन्हें वोट लेने के लिये
नोट देने की ज़रूरत होती न वोट की भीख माँगने की
तब न इन्हें बन्दूक वाले रक्षकों की ज़रूरत होती
न डर-डर कर रातों को जागने की
और न कुर्सी छिन जाने की फ़िक्र होती
काश ये राजनेता सच्चे इन्सान बन जायें
तो मेरा भारत देश कितना महान बन जाये

❄❄❄

रोज़ एक ख़ुशी

हर दिन से एक ख़ुशी अपने लिये ले लो
हर दिन में एक ख़ुशी किसी के लिये दे दो
ख़ुशियों का लेन-देन यूँ ही चलता रहे
ज़िंदगी का हर दिन यूँ ही निकलता रहे
दुनिया में भटकने से ख़ुशी न मिल पायेगी
ख़ुशी तो अपने अन्दर ही है वहीं से खिल जायेगी
खिली-खिली ख़ुशियों को बाँट दो अपनों में
रोज़ रात एक ख़ुशी मिल जायेगी सपनों में
ज़िंदगी तो है ख़ुशियों और ग़म का ख़ज़ाना
ख़ुशियों को छाँट लो ग़म को कर दो बेगाना
रोज़ की एक ख़ुशी काफ़ी है अपने लिये
रोज़ की एक ख़ुशी ज़रूरी है देने के लिये

❊❊❊

कल होली खेली

जी भर कर कल होली खेली
रंग बिरंगी होली खेली
हँस-हँस नाचीं सखी सहेली
रंग बरसाये भर-भर झोली
याद आये मथुरा वृन्दावन
गोपी ग्वाले गौएँ कुंजनवन
बरसाने की राधा प्यारी
आज तलक जिसकी छवि न्यारी
कृष्ण कन्हैया छुप-छुप आया
भर-भर हाथों में रंग लाया
सबने ख़ूब रंग बरसाया
वातावरण सरस सरसाया
कान्हा रंग में ख़ूब नहाया
राधा को सतरंग बनाया
हिल-मिल गले मिलीं सब सखियाँ
चमक रहीं थी सबकी अँखियाँ
स्नेह प्रेम की ख़ुशबू फैली
होली गायें सखियाँ अलबेली
नृत्य गान करतीं अठखेली
रंगों की बौछारों के संग
जी भर कर कल होली खेली
रंग बिरंगी होली खेली

❄❄❄

आदर्शों की परिभाषा

हालातों के हिसाब से
आदर्शों की परिभाषा
समय-समय पर
बदलती रहती है
कैसी विडम्बना है विधि की
परिभाषाओं और आदर्शों की अदला-बदली
हालातों के अंकों से
कुण्डली के अंकों में
इन्सानों के अनुसार होती रहती है
अंक ऊपर-नीचे
दायें-बायें हो जाते हैं
परिभाषाओं के शब्दों के हेर-फेर भी
समीकरणों के आधार पर
समयानुसार होते रहते हैं
धर्म, समाज, मानवता, नैतिकता,
वैचारिकता- सबके व्यवहार
समय और हालातों की
अंक घड़ी के अनुसार
अपनी-अपनी जगह तलाश लेते हैं
नये-नये हालातों के साथ
उनकी गणनानुसार
तथाकथित ज्योतिषाचार्य
आदर्शों की नई-नई
परिभाषायें गढ़ लेते हैं
अपनी सुविधानुसार
वक़्त की कुण्डली पढ़ लेते हैं

❄❄❄

पूरी मौत

मेरी नाकाम हसरत का
जनाज़ा उठ गया यारों
मैं सब कुछ जान कर भी
दिन दहाड़े लुट गया यारों
हमारे बाद मरने के
कहीं चर्चे हमारे हो
तो कहना एक ग़मगीं दिल
कहीं पर बुझ गया यारों
हमारी ज़िंदगानी तो
महज़ टूटा खिलौना थी
कि मर कर एक पूरी मौत तो
मैं मर गया यारों
जनाज़ा जब मेरा निकले
तो बस यह शेर पढ़ देना
कोई किस्मत का मारा
किस्मतों से छुट गया यारों

❄❄❄

हमें जी-जी कर जीना है

अपने मन में उदासियाँ जमा करके
दिल और दिमाग़ में उदासी की ठंडक भरके
अपनी ज़िंदगी को निर्जीव बना कर क्यों जियें
ख़ुद अपने हाथों से अपने लिये
ज़हर का प्याला बना कर क्यों पियें
उदासी देने वाले ज़हर पिलाने वाले
दूसरों की ख़ुशियों पर ग्रहण लगाने वाले
दूसरों की सफलताओं से दुखी होने वाले
या असफलताओं पर हँसने वाले
ईर्ष्या, द्वेष या घृणा से कुण्ठित करने वाले
व्यंग बाणों से हृदय को छलनी करने वाले
राहों में बाधायें डालने वाले
आस्तीन में छुपे साँप की फ़ितरत वाले
अर्थात् दूसरों के जीवन में ज़हर घोलने वाले
तरह-तरह के अपने-पराये बहुत हैं
जो आस-पास रह कर करते हैं विश्वासघात
पग-पग पर देते हैं आघात
इतना ज़हर पीने के बाद तो हमें
इस ज़हर को मारने का उपाय करना है
हमें मर-मर कर नहीं जीना, जी-जी कर जीना है
कुण्ठाओं और उदासियों को अपने से दूर रख कर
अपने जीवन को सजीव बनाये रखना है
निन्दकों को आस-पास रखकर कबीर जी के अनुसार
बिना साबुन पानी के अपने दिल दिमाग़ को साफ़ रखना है
किसी बाधा से घबरा कर जीना नहीं छोड़ देना है
हमें अपने दिल दिमाग़ से उदासियों का रुख मोड़ देना है
क्योंकि हमें जी-जी कर जीना है

❄❄❄

कैसे

सूना दिन है
बुझी हुई रातें
कैसे हम
ज़िंदगी के दिन काटें
जीना भी ये
भला क्या जीना है
सूने मन प्राण
सूखी बरसातें
कोई साथी
मिला न राहों में
कौन पूछेगा
साथ की बातें
बुझती बुझती सी रौशनी
ये कहो
कैसे बुझ-बुझ के
रौशनी बाँटें
किसके ऊपर
हँसोगे अब ऐ दोस्त
ख़त्म कर जायेंगे
मुलाकातें

❄❄❄

खण्डहर को घर बनाने के लिये

लग गई थी आग बस्ती जल गई सारी
आखिर पहुँच ही गए टैंकर राख बहाने के लिये
सब खाक हो जाने के बाद आग बुझाने आ गये
अलविदा कह छोड़ कर मझधार में फिर चल दिये
हमने जलती आग में रहने के ढंग भी सीख लिये
मुड़ के फिर क्यों देखते हमको जलाने के लिये
खण्डहरों में दीया जलाने का शौक नहीं है हमको
हम तो जीते हैं खण्डहर को घर बनाने के लिये
रिश्तों को तोड़ना बहुत आसान होता है दोस्त
हम तो रहते हैं रिश्तों को निभाने के लिये
हमको चार दीवारों का मकान नहीं चाहिये दोस्त
एक घर की छत चाहिये सिर छुपाने के लिये
दुनिया से मिली ठोकरों के बीच भी उम्मीद रहती है
हम तो जीते थे, जीते हैं और जियेंगे ज़माने के लिये
काँटों के बीच खिलता हुआ गुलाब हँस पड़ा
ख़ुदा के पास काँटों की ही सेज थी हमें सुलाने के लिये
जाते-जाते दोस्त मेरे एक पल तुम जो रुके
समझे हमें आवाज़ दोगे तुम बुलाने के लिये
तुमने तोड़ा भरम मेरे दिल के झूठे यक़ीन का
तुम तो आये थे हमें फिर से रुलाने के लिये
दिल की बस्ती जल गई आखिर में तुम क्यों आ गए
क्या रहा बाक़ी था कुछ हमको सुनाने के लिये

❋❋❋

कहीं कोई अपना न कोई पराया

कभी हँस लिये हम कभी रो लिये हम
समझ न पाये ज़िंदगी में क्या खोया क्या पाया
कभी लगा यूँ सारी दुनिया हमारी
कभी साथ तक न था अपना ही साया
वफ़ा क्या जफ़ा क्या किसी ने न जाना
वही जाने जिसने है आँसू बहाया
कहें क्या सहें क्या समझ ही न पाये
ये दिल ने हमें कैसे पल-पल सताया
है कहना भी मुश्किल है सहना भी मुश्किल
अपने क्यों न आये क्यों न हमको बुलाया
यूँ रिश्तों के जंगल में उलझे रहे हम
कहीं कोई अपना न कोई पराया
बड़ी ही वफ़ा से है ख़ुद को ही लूटा
बड़े प्यार से ख़ुद से नाता निभाया

❊❊❊

मिलेगी न शान्ति

जिस दिन तुम डरने लगो अपने ही मन से
समझ लेना गिर गए तुम अपनी नज़र से
न पर्वत, न जंगल, न घाटी, न वादी
कहीं न मिलेगी अपने ही मन से आज़ादी
मिलेगी न शान्ति किसी भी नगर से

नहीं कोई कोना है दुनिया में ऐसा
जहाँ जाके बच जाओ तुम अपने 'ख़ुद' से
ख़ुद को मिटा कर ही बच पाओगे तुम
ख़ुद के ख़ुदा से ख़ुदा के क़हर से

जो पापों का पछतावा कर न सकोगे
तो मर कर भी मुक्ति मिल न सकेगी
जो मरना भी चाहोगे मर न सकोगे
किसी भी जतन से किसी भी ज़हर से

ये जीवन बड़ा ही है अनमोल बन्धु
यूँ ख़ुद को गिराना न अपनी नज़र से
कोई काम ऐसा कभी भी न करना
चुरानी पड़े दृष्टि आठों प्रहर से

❄❄❄

अब नहीं आयेंगे

में भूल गई हूँ दुनिया को
बस अपने अन्दर ढूँढ रही
बचपन की नन्ही मुनिया को
जो माँ के आँचल में छिप कर
मैया से लाड़ लड़ाती थी
जो कूद-कूद कर खाती थी
हँसती-रोती थी गाती थी
जो लहक-लहक कर नाचती थी
जो क-ख-ग-घ बाँचती थी
जी भर सखियों संग खेली थी
प्यारी सब सखी सहेली थीं
न जाने कब हो गए बड़े
अपने पैरों पर हुए खड़े
वो जीवन पीछे छूट गया
वो कितनी जल्दी रूठ गया
जीवन तो सारा बदल गया
तन-मन को जैसे निगल गया
दिन पंख लगा कर बीत गए
हम भी उनके संग रीत गए
बीते दिन झुर्री बन-बन कर
चेहरे पर चिपक गए आ कर
जैसे समझाते हैं हमको
अब नहीं आयेंगे हम जा कर

❊❊❊

दुविधाओं के घेरे में

दुविधाओं के घेरे में फँस कर भी होगा क्या हासिल
बीच भँवर में डूब जाओगे मिलेगा न कोई साहिल
दो नावों पर चल न सकोगे निर्णय तो करना होगा
दोनों में से एक राह पर साहस से चलना होगा
निर्णय सही रहे बन्धु यह निर्णय तुमको ही करना होगा
देव और दानव दोनों में से एक तुम्हें चुनना होगा
इस संघर्ष भरे जीवन में संघर्षों से न डरना
जीवन तो संघर्ष ही होता तुम्हें कार्य अपना करना
पग-पग पर बाधायें आकर राहों में रोड़े अटकातीं
उलझन में अटका कर हमको हमें लक्ष्य से हैं भटकातीं
करो स्वयं से तुम यह वादा
हमें लक्ष्य से नहीं भटकना
आयें रोकने जो राहें
उन दुविधाओं को दूर झटकना
आँखें सदा खोल कर रखना
जीवन में न होना ग़ाफ़िल
कभी न फँसना दुविधाओं में
उससे कुछ न होगा हासिल

❄❄❄

प्रश्न ज्यों के त्यों हैं

सैंकड़ों वर्ष पूर्व
बाबा कबीर ने कुछ प्रश्न किये थे
रंगी को नारंगी क्यों कहें?
जमे दूध को क्यों खोया ?
चलती को गाड़ी क्यों कहें?
यह सब देख कबीरा रोया
तब से सैंकड़ों वर्ष बाद भी प्रश्न ज्यों के त्यों हैं
आज तो और भी प्रश्न उनमें जुड़ते जा रहे हैं
सड़क पर चलते मुसाफ़िर ने पूछा
यह सड़क कहाँ जा रही है
उत्तर देने वाला थोड़ा दार्शनिक निकला
जवाब दिया-
महाशय सड़क नहीं आप जा रहे हैं
सड़क तो यहीं रहेगी
उस दिन हम रिक्शे में बैठे
ज़रा जल्दी में थे
घर पहुँचते ही चिल्लाये
रोको-रोको घर आ गया
रिक्शा वाला भी कुछ रसिया निकला
मुस्कुरा कर बोला-
साहब घर नहीं आया
आप आयें हैं घर पर
मियाँ आप पहुँच गए घर पर
फिर मुस्कुरा कर बोला-
उतरिये...

❊❊❊

अमीर खुसरो से सीखा

कभी हँसाये कभी रुलाये
कभी बुला कर छुप-छुप जाये
स्वर उसका पागल कर जाता
क्यों सखि कोयल न सखि कान्हा...
सम्मुख आये तो बिजली चमके
जब-जब बोले घन-घन गरजे
जब वो गरजे काँपे तन-मन
क्यों सखि बादल न सखि साजन...
वह आये तो मन सरसाये
उसका आना मन को भाये
उसके बिन मन पल-पल तरसा
क्यों सखि साजन न सखि वर्षा...
जितना देखूँ मन न भरे
उसके बिना मन कुछ न करे
मुझे बनाये वह परजीवी
क्यों सखि साजन न सखि टी.वी...
उस बिन सब कुछ लगता फीका
सब कुछ लगता रीता-रीता
उससे मैंने बहुत कुछ सीखा
क्यों सखि टी.वी. न सखि कविता...
उनके जैसा कोई न दीखा
उनसे हमने बहुत कुछ सीखा
वो न होते तो रहते फ़कीर
सुन सखि वो हैं खुसरो अमीर

❊❊❊

क्यों दुनिया में आने न दिया

क्या था कुसूर दुनिया मेरा
क्यों दुनिया में आने न दिया
मैं अँधकार में रहती थी
जलने न दिया जीवन का दिया
बाहर दुनिया में आने पर
करने थे बहुत से काम मुझे
माँ-बाबू भाई-बहन सब घर को
देना था ढेर सा प्यार मुझे
मैं प्यार बाँटने आई थी
क्यों मेरा जीवन बुझा दिया
जग ज्योतित करने आई थी
दीपक क्यों मेरा बुझा दिया
भैया की राखी लाई थी
पापा की सेवा करनी थी
पढ़ना लिखना था बहुत मुझे
माँ की रसोई भी करनी थी
कन्या को माता कह-कह कर
माता की पूजा करते हो
मुझ अनदेखी को मार दिया
क्या इसी को पूजा कहते हो
जिस माँ की पूजा करते हो उसका बलिदान चढ़ाते हो
जिस रूप का जीवन हरते हो उसकी मूर्तियाँ गढ़ते हो
शायद दुनिया में आकर भी मैं जी न पाती दुनिया में
माँ-पापा पर बोझ बनती लड़की होने के सौ ताने सुनती दुनिया में
कन्या हूँ यही कुसूर मेरा जो दुनिया में आने न दिया
जग ज्योतित करने आई थी दीपक क्यों मेरा बुझा दिया

❄❄❄

स्वाति की बूँद

मृत्यु से पहले
मिलूँ इक बार तुमसे
और अपने रंजो ग़म की
अपनों से पाये
दर्द और सितम की
सुख की दुःख की
पल-पल की छिन-छिन की
दास्ताँ तुमको सुनाऊँ
तुम जो यूँ रूठे हो मुझसे
एक बार मिलो
तो सारी सृष्टि का
सब प्यार दे कर
प्यार से मनुहार दे कर
राधिका बन मैं रिझाऊँ
मेरी मन वीणा
तभी से सो रही है
नेह के सुर ताल
सरगम खो रही है
चातकी के लिये बन कर
स्वाति की तुम बूँद आओ
पास तुम बैठो
तुम्हें मैं नेह की वीणा सुनाऊँ
आओ बन कर साज़ मेरे
मैं मिलन की गीत गाऊँ

❄❄❄

दिल के ख़ज़ाने

ले के जाओगे कहाँ
दौलत के ख़ज़ाने यारों
ले के आया है कोई
और न ले जायेगा यारों
किसके हिस्से की है दौलत
जो जमा की तुमने
और किस काम की शोहरत
जो समेटी तुमने
कितनी आहों से भरे तुमने
ख़ज़ाने यारों?
कर लो कुछ काम भले
साथ में जो जायेंगे
कर लो कुछ काम जो
अफ़साने ही बन जायेंगे
तोड़ो लोहे की तिजोरी को
भरो दिल के ख़ज़ाने यारों
ले के जाओगे कहाँ
दौलत के ख़ज़ाने यारों

❄❄❄

करो हिम्मत ज़रा

हर तरह के ज़ुल्म क्यों सहते हो तुम
क्या अजब हरकत मियाँ करते हो तुम
ये जो दुनिया है सतायेगी तुम्हें
मूर्ख पग-पग पर बनायेगी तुम्हें
हर तरह से तुमको लूटा जायेगा
हर तुम्हारा वार झूठा जायेगा
लोग चूसेंगे तुम्हारा ख़ून भी
खाना तक पाओगे न दो जून भी
ये तुम्हें जीने न देंगे चैन से
छीन लेंगे नींद तेरे नैन से
जागते में तो रुलायेंगे तुम्हें
सपनों में भी आकर डरायेंगे तुम्हें
है समय अब भी करो हिम्मत ज़रा
क्यों नहीं अपनी भी कुछ कहते हो तुम
हर तरह के ज़ुल्म क्यों सहते हो तुम
क्या अजब हरकत मियाँ करते हो तुम

❊❊❊

हालात

जाते हैं जाने की तमन्ना तो नहीं है
रुक जायें मगर ऐसे तो हालात नहीं हैं
दिल चीर दें दिखायें आँसू के बहाने
खो जायें होश ऐसे भी सदमात नहीं हैं
फिर भी है तड़प दिल में ख़लिश सी भी कहीं है
बरबाद दिल नहीं पर आबाद भी नहीं है
कहने को है बहुत कुछ मगर कह नहीं पाते
हाले जिगर बयाँ करें अलफ़ाज़ भी नहीं है
होता है सबके साथ नई बात नहीं है
फिर भी हैं परेशान मगर बेबात नहीं है
दिल परेशान है हम भी हैरान हैं कैसे बतायें
शायद दिल मर चुका कोई भी जज़्बात नहीं है
हर तरफ़ शान्ति ही शान्ति कोई भी आवाज़ नहीं है
गहरी नींदों में सब सोये कोई भी उत्पात नहीं है
जाते हैं जाने की तमन्ना तो नहीं है
रुक जायें मगर ऐसे भी हालात नहीं हैं

❄❄❄

कैसी प्यास

मैं नदी के तीर बैठी
तरसती हूँ
एक बूँद पानी के लिये
मैं भरी दोपहर में
ताकती हूँ
रौशनी की एक किरण के लिये
यह कैसी प्यास है
कैसा असंतोष है
यह मेरा अपना
या मेरे भाग्य का दोष है
इन्सान की हर तमन्ना
पूरी नहीं होती
किंतु हर चाहत
अधूरी भी तो नहीं रहती
मंज़िलों की राहें मुश्किल होती हैं
पर असम्भव नहीं
प्रेम, प्यार और हमदर्दी
लेन-देन के मामले हैं
जितना दोगे उतना मिलेगा
नहीं दोगे तो कैसे मिलेगा
फिर यह कैसा तरसना
आँखों का कैसा बरसना
मैं तलवार की धार पर बैठी
तरसती हूँ ज़िंदगी के लिये
मैं नदी के तीर बैठी
तरसती हूँ
एक बूँद पानी के लिये

❄❄❄

मेरा दीपक

मेरे दीपक की लौ को
जी भर कर देखो
इसकी रौशनी से
हवाओं के रुख बदल जायेंगे
मेरे दीपक ने सीखा है
आँधियों में जलना
तूफ़ानों में मुस्कुराना
सूरज की किरणों को
अपने अन्दर छुपा कर
बिजलियों से सीखा है चमचमाना
इसकी लौ में भरी है बादलों की गरज
अँधेरों के दिल दहल जायेंगे
चाँद की शीतलता भी
मेरे दीप में छिपी है
रौशनी की चादर देखो
सामने बिछी है
सूरज चाँद सितारे
सब बंद हैं
मेरे दीपक की मुट्ठी में
रौशनी बिखेरना
पिया है इसने घुट्टी में
जिधर इसने रुख किया
जगमग महल बन जायेंगे
मेरे दीपक की लौ से
हवाओं के रुख बदल जायेंगे

❊❊❊

तेरी आँखें

जीवन की टेढ़ी-मेढ़ी
पगडण्डियों पर चलते
जीवन की ऊबड़-खाबड़ राहों पर
डगमगाते मेरे पाँव
मेरे भयभीत हृदय का स्पन्दन
मस्तिष्क का कम्पन
थरथराती दृष्टि
दृष्टिपथ से फिसलती सृष्टि
पाँव तले जलती ज़मीन
सुरसा के मुँह सी लपलपाती
लीलने को तैयार राहें
कैसे मेरा तन-मन
इन सब से निबाहे
ऐसे में
दीप सी जलती तेरी आँखें
निःशब्द मेरे पीछे रहती हैं
मेरे हृदय और मस्तिष्क को आलौकित कर
मुझे आश्वस्त करती हैं
मेरे पथ को ज्योतित कर
मेरा मार्ग प्रशस्त करती हैं
तेरी वह मूक दृष्टि
मुझे सहस्त्रों प्रवचनों से अधिक
मुखर और प्रेरक लगती हैं
और मुझमें
सभी विषम परिस्थितियों से
जूझने का विश्वास भरती हैं

❊❊❊

एक नया मोड़

जीवन के दुद्धर्ष संघर्षों में
पग-पग पर उलझना
जीवन के सन्दर्भों को ढूँढते हुए
अन्तर का बिलखना
अपने अस्तित्व को पुकारता
आँखों का शून्य
क्षण-क्षण बदलते
जीवन के मूल्य
नित नये बदलते समीकरण
नित नया जोड़ तोड़
जीवन की स्थिरता के लिये
जीवन की भाग दौड़
फिर भी भावनाओं पर
जड़ता का पहरा है
ठहरा सा जीवन
ढूँढता एक नया मोड़

❊❊❊

फूलों से बातें करो

अपने आप को अकेला समझ कर
न करो अपने साथ अन्याय
अकेलापन दूर कर लो
बहुत से हैं उपाय
जब तुम्हारे ऊपर
अकेलेपन का अँधेरा छाने लगे
तुम्हारे दिल और दिमाग़
साथ छोड़ कर जाने लगें
तो कुछ अच्छी यादों को याद करके
मुस्कुरा लो
कुछ सुरीले गीतों को गुनगुना लो
एक अच्छी किताब पढ़ कर
कुछ नये अहसास एकत्रित करो
उन प्यारे अहसासों को
अपने गीतों या चित्रों में चित्रित करो
बाहर जा कर फूलों से बातें करो
पेड़ों से मुलाकातें करो
आकाश के रंगों को देखो
धरती के अंगों को देखो
प्रकाश लो सूरज चाँद सितारों से
मित्रता करो कुदरत के नज़ारों से
पास पड़ौस में निकल जाओ
किसी निश्छल बच्चे की
तोतली बातों में खो जाओ
सब कुछ भूल कर कुछ क्षणों के लिये
अपने बचपन में लौट जाओ
और अकेलेपन को भूल जाओ

❊❊❊

झाँके मनभावन

कौंध उठी विद्युत सी
टीस उठी अद्भुत सी
सिहर उठा तन-मन सब
घिर आए आँखों में
शत-शत सावन
माटी की गन्ध सी
यादें महक उठीं
अन्तर की सोई
वीणा चहक उठी
स्वप्नों में आ कर
झाँके मनभावन
सदियों से छाई
कारी बादरिया
फट गई क्षण भर में
बाजी बाँसुरिया
हो उठा रक्तिम
बदराया आनन
मेरे मन प्रान्तर में
कुहुक उठी कोयलिया
झनक झनक थिरक उठी
यादों की पायलिया
खनक उठे नूपुर
गूँजा मन वृन्दावन

❄❄❄

महक

मैंने ज़िंदगी को
बड़े करीब से देखा है
पल-पल बनते बिगड़ते
नसीब को देखा है
ज़िंदगी के पल
बड़े अनोखे होते हैं
क्या से क्या हो जाता है
पलक की झपक में
कभी ख़ुशियों की बारिश
कभी धोखे होते हैं
बरसों बीत जाते हैं
जिनकी कसक में
पल भर में छोड़ जाते हैं
बरसों के साथी
तरस जाते हैं देखने को
काश दिख जायें कभी
सपने की झलक में
प्यार से गुज़ार लें
जो दिन हैं ज़िंदगी के
दुश्मनी से किसको
क्या आज तक मिला है
काँटों को दूर करें
फूलों में बस जायें
भूल जायें सारे दुख
उनकी महक में

❄❄❄

एक बूढ़ी ख़्वाहिश

मेरे अपने
तुम क्यों अपने सिर पर
मेरे क़त्ल का इल्ज़ाम लेना चाहते हो
तुम क्यों अपने हाथों से
मुझे हाशिये पर बैठाना चाहते हो
मैं तो वैसे ही हाशिये पर हूँ
मेरी ज़िंदगी का सफ़र तो पूरा होने ही जा रहा है
इस जनम का आखिरी पहर नज़दीक आ रहा है
मेरी मंज़िल मेरे सामने साफ़ नज़र आ रही है
फिर क्यों तुम्हारे हाशिये की लकीर राह में आ रही है
ज़िंदगी की डोर
हाथ से पल-पल खिसक रही है
हाँ मेरी कुछ अधूरी ख़्वाहिशें घुट कर सिसक रही हैं
मेरा बंजारा मन खुली वादियों
झरनों पहाड़ों और नदियों के साथ
परिन्दों के गीत सुनना चाहता है
जंगल की झाड़ियों में छुपना चाहता है
उन ख़्वाहिशों को मैं प्यार से समझा दूँगा
उनको अपने अन्दर छुपा कर सुला दूँगा
मेरी अना मुझे इस बात की इजाज़त नहीं देती
कि मैं हाशिये पर बैठ कर
ज़िंदगी की डोर तोड़ दूँ
इससे कहीं अच्छा है
कि मैं अपनी सारी अधूरी तमन्नाओं का
रुख ही मोड़ दूँ
और फ़ख्र से सिर उठा कर जीता हुआ
एक दिन अचानक से उठ जाऊँ
सारे बंधनों से छूट जाऊँ

❄❄❄

कुछ खो गया है

बड़ी आदत सी हो गई मुझको
ग़मों के साथ रहने की
रंज के साथ रहने की
दर्द को रोज़ सहने की
बरसों के मेरे ये साथी
अगर कुछ दिन को
मुझे छोड़ जाते हैं
शायद अनजाने में
मुझसे मुँह मोड़ जाते हैं
तो लगता है मुझे कुछ हो गया है
जैसे मेरा कुछ खो गया है
कोई मुझसे रूठ गया है
हाथों से कुछ छूट गया है
कैसा है मेरा यह रिश्ता
दर्द रंज और ग़म से
जो जितना है रिसता
उतना ही मज़बूत होता है
सुख में भी उन दिनों को याद कर
दिल छुप-छुप कर रोता है

❄❄❄

उधार या भिक्षा

बुझा-बुझा सा हृदय
मस्तिष्क चकराया सा
क्यों कभी-कभी जीवन
लगता ठुकराया सा
न कोई सपना
न कोई इच्छा
लगता हर पल जीवन का
उधार या भिक्षा
क्यों कभी-कभी जीवन में
इतना शून्य भर जाता है
जिसमें डूब कर मानव का
अस्तित्व ही मर जाता है
क्यों उमंगो से भरा जीवन
कभी-कभी हो जाता है
इतना लाचार
कि अपनी ही साँसों से
हो जाता है बेज़ार
हो जाना चाहता है
पंचतत्व में विलय
मस्तिष्क चकराया सा
बुझा-बुझा सा हृदय

❄❄❄

किसकी पनाहों में

इधर जा रहा हूँ
उधर जा रहा हूँ
कहाँ जा रहा हूँ
किधर जा रहा हूँ
मैं कैसे बताऊँ
मैं क्यों जा रहा हूँ
न मंज़िल है मेरी
न कोई ठिकाना
न कोई है अपना
न कोई बेगाना
मैं पत्ता हूँ सूखा
उड़ा जो हवा से
नहीं जानता वो
कहाँ उसको जाना
चला जायेगा वो
हवा की दिशा में
कहाँ होगा दिन में
कहाँ पर निशा में
हवा जैसे रखे
रहेगा वो वैसे
कोई बस न उसका
बचेगा वो कैसे
हवाओं के रुख तो

बदलते हैं रहते
उड़े जा रहे हम
नहीं कुछ हैं कहते
है कहना भी क्या
जब सभी कुछ है सहना
हमें तो हवाओं के
संग-संग है बहना
मैं भटका हूँ जीवन की
राहों में साथी
कहाँ जाऊँ
किसकी पनाहों में साथी
उड़ा जा रहा हूँ हवाओं में साथी
मुझे ले लो अपनी पनाहों में साथी
मुझे छोड़ न देना राहों में साथी

❋❋❋

ज़िंदगी के साज़

ज़िंदगी जब न चले
सही किसी चाल पर
छोड़ दो तब ज़िंदगी को
ज़िंदगी के हाल पर
उस तरफ़ मुड़ जाओ
ले जाये जिधर को
पूछो मत राहों से
चलीं तुम किधर को
सोचना भी छोड़ दो
सोच पर लगा लो ताले
ज़िंदगी को कर दो
ज़िंदगी के हवाले
ख़ुद को भुला कर
हो जाओ गुम
दूर कहीं शून्य में
खो जाओ तुम
एक दिन ज़िंदगी ख़ुद
लगायेगी तुम्हें आवाज़
एक बार फिर बज उठेंगे
ज़िंदगी के साज़
ज़िंदगी ही जानती है
ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव
कब आते हैं तूफ़ान
कब आता है ठहराव

❄❄❄

काला शून्य

हम तो तूफ़ानों से ही डरते रहे ताज़िंदगी
फिर भी तूफ़ानों ने बख्शा न कभी हमको
हम जिन्हें समझा किए दुनिया की दौलत
वो कभी ज़र्रा तलक समझे न हमको
जितना चाहा डूब जायें हम गुलों की नर्मियों में
उतने ही काँटें सदा मिलते रहे बदले में हमको
प्यार से जिनको पुकारा पास जा कर
वो बड़ी नफ़रत से पलटे देख हमको
पाँव के छाले बुझाने हम चले थे
पर सदा चलना पड़ा शोलों पे हमको
रस भरी प्यारी फुहारों की तलब में जी रहे हैं
सामना ओलों से ही बस पड़ा हमको
कौन से हैं रंग दुनिया के समझ पाये कभी न
एक काला शून्य ही मिलता है हमको

❄❄❄

ख़ुद को मैं ठगता गया

कितने ग़म सीने में लेकर चल रही है ज़िंदगी
सोच कर देखो कि कितनी बेशरम है ज़िंदगी
ग़म भरे सीने में फिर भी होंठ मुसकाते रहें
आँख के आँसू भी अन्दर दिल के टपकाते रहें
सब को धोखा दे रहे थे हम बड़ी ही शान से
आईने में ख़ुद जो देखा भेद सारा खुल गया
ख़ुद को ठग पाना है मुश्किल भूल जाती ज़िंदगी
झूठ की पींगों पे चढ़ कर ख़ुद को मैं ठगता गया
हर क़दम पर हाँफ़ता था और मैं थकता गया
ठोकरें खा कर के भी जीने का जज़्बा हम में था
दोस्तों ने फूलों से ज़ख्मी हमें क्यों कर दिया
ज़िंदगी में ज़िंदगी को ढूँढती है ज़िंदगी
कैसे अपने आप को ठगती है रहती ज़िंदगी

❊❊❊

इक झोंका ही था

मेरे सूने मन उपवन में तब
फूल कोई खिल जाता है
सूने सूने जीवन में जब
अपना कोई मिल जाता है
क्षण भर ही सही
आया तो सही
मेरी बगिया को महकाने
इक झोंका ही था
चला गया
आया तो मन को बहकाने
मिलते रहते
ऐसे साथी
सूनी राहों में जीवन की
जो भर जाते हैं प्राण वायु
मेरी आहों में जीवन की
यूँ ही जीवन चलता रहता
सुख दुख का क्रम चलता रहता
सूना अन्तर बनता उपवन
भर जाती भ्रमरों की गुंजन
जब मरुभूमि में
मरुद्यान बन
आकर कोई मिल जाता है
मेरे सूने मन उपवन में तब
फूल कोई खिल जाता है

❊❊❊

गीत

पल दो पल को मिल जाओ
कुछ कह दो कुछ सुन जाओ
कहने को तो बहुत है मन में
फिर भी सुन लो तुम दो क्षण में
अतृप्ति में स्वाति बूँद बन
तृप्त मुझे तुम कर जाओ
जीवन तो है गहरा सागर
फिर क्यों खाली मेरी गागर
मेरा सागर तो बस तुम ही
मेरी गागर भर जाओ
नील गगन में जितने तारे
उतने अनगिन घाव हमारे
मेरे भाग्य के तिमिर गगन में
चंदा बन कर आ जाओ

❄❄❄

यादों की गन्ध

यादों के गलियारों में घूमते
कुछ खट्टी-मीठी यादों की
मीठी, तीती, तीखी सुगन्ध को सूँघते
याद आईं कुछ यादें
कुछ कसमें कुछ वादे
यादों के घने जंगल में
छुपे थे कुछ फूल कुछ काँटे
कुछ प्रीत गीत के क्षण
कुछ सन्नाटे
कुछ भूले बिसरे चित्र
कुछ खोये बिछड़े मित्र
कोई मधुर मुस्कुराहट भरी याद
कोई घाव कुरेदती कराहट भरी याद
ये मीठी कड़वी यादें तो
एक अनमोल धरोहर होती हैं
जिन्हें याद कर आँखें
कभी हँसती हैं कभी रोती हैं
कैसे लगा दूँ यादों पर पहरे
इन्हीं में तो दबे हैं
मेरी ज़िंदगी के
कुछ उजाले कुछ अँधेरे

❊❊❊

मेरी हँसी पुरानी

माँग रहा है मेरा दर्पण मुझसे मेरी हँसी पुरानी
बता कहाँ से लेकर आऊँ भोले अपनी हँसी सुहानी
तू तो बैठा यहीं सदा से मैं घूमी हूँ पूरी दुनिया
ढूँढ रहा तू कैसे मुझ में अपनी वो नन्ही सी मुनिया
खाईं ठोकरें पूरे जग की जो बैठी हैं मन के अन्दर
एक-एक ठोकर की रेखा खिंची हुई है मेरे मुख पर
मेरे हर सुख दुख की गाथा लिखी हुई मेरे मुखड़े पर
वक़्त नहीं रखता है मरहम मानव के हर इक दुखड़े पर
मेरे जीवन की राहों में कम थे फूल अधिक थे काँटे
दोनों ने मेरी किस्मत के अपने-अपने हिस्से बाँटे
फिर भी चुभते काँटों में मैं हँसती रहती हूँ दीवानी
फूल और काँटे चुनते-चुनते मिला बुढ़ापा गई जवानी
मन के घावों की पीड़ा से बन जाती है हँसी वीरानी
बता भला कैसे दिखलाऊँ तुझको अपनी हँसी पुरानी

❄❄❄

ख़ुद को आज़ाद करो

चेहरे पे अँधेरों के
जो छाये हैं साये
कोशिश तुम लाख करो
छुपते नहीं छुपाये
क्यों ख़ुद को तुम छुपाते हो
बन्धु अँधेरों में
क्यों बाँधते हो ख़ुद को
तुम अपने ही घेरों में
ये घेरे तुम्हें चैन से
जीने नहीं देंगे
मरना भी चाहोगे
तो मरने भी नहीं देंगे
ख़ुद को तो छुपा लोगे
दुनिया की नज़र से
पर कैसे मिलाओगे नज़र
अपनी नज़र से
अच्छा है कि ख़ुद को
आज़ाद करो ख़ुद से
इक नई सुबह का वादा
तुम आज करो ख़ुद से

❄❄❄

तेरी यादों के सहारे

ज़िंदगी यूँ ही गुज़र जायेगी
तेरी यादों के सहारे
जीवन के कोई सपने
अपने नहीं हमारे
आती हैं याद राहें
जिन पर चले थे हम तुम
राहों में छोड़ हमको
जाने कहाँ गये तुम
हम ढूँढते वो लम्हे
जो साथ थे गुज़ारे
मुमकिन नहीं है साथी
अपनों को भूल जाना
दिन रात है सताता
गुज़रा हुआ ज़माना
आ जायें काश फिर से
बीती हुई बहारें
किसको पता है किसकी
किस्मत में क्या लिखा है
क्या वक़्त का पता है
यह किसको कब दिखा है
दिल का मेरा ख़ज़ाना
बिन मोल लुट गया रे
फिर भी हैं जी रहे हम
तेरी याद के सहारे

❄❄❄

ये कैसी कहानी

लम्हों ने ख़ता की थी
सदियों ने सज़ा पाई
शायर ने किस्मत की कैसी
गढ़ कर तस्वीर बनाई
ये इसकी कहानी है
या उसकी कहानी है
ये कैसी कहानी जो
सबके लिये बनाई
हम कह भी नहीं पाते
हम सह भी नहीं पाते
दोनों के बीच की हद
गई हमसे न बनाई
पल में बदल के दुनिया
ग़म ज़िंदगी के दे के
मेरे नसीब ने ये
कैसी सज़ा सुनाई
ख़ुद ही ख़ता हैं करते
ख़ुद ही सज़ा हैं देते
फिर भी हैं देते हरदम
किस्मत की क्यों दुहाई
पल भर की ख़ुशी दे के
बरसों का चैन ले के
सपनों ने अपना बनके
नींदें मेरी चुराई
ये दाग़ ज़िंदगी के
धुलते हैं न हैं बहते
आँखों में आँसुओं की
नदियाँ भी हैं बहाईं

❄❄❄

राजनीति के खेल

राजनीति के खेल
बड़े विचित्र होते हैं
जो बाहर से शत्रु दिखते हैं
अन्दर से मित्र भी हो सकते हैं
उदाहरण महाभारत में है
कौरव पाण्डव रात का भोजन
एक साथ करते थे
महाभारत की कथाओं में
सबको महारत है
"अश्वत्थामा मरो नरो वा कुंजरो"
सबको याद है
समय पड़ने पर
इस उक्ति का सहारा लेने के लिये
सब आज़ाद हैं
अकेले अभिमन्यु के लिये चक्रव्यूह रचा जाये
या तोड़ा जाये कर्ण के लिये पहिये का चक्र
कौन बचा सकता है उसको
जिसके लिये विधि हो वक्र
कितना विश्वास है भगवान पर
राजनीति और कूटनीति
कितना रंग चढ़ा देती है इन्सान पर
महाभारत में जो भी है आपस में बाँट लेते हैं
द्रौपदी का उदाहरण है सामने
पाँच पाण्डव खड़े हैं उसको थामने
हम दुर्योधन या शकुनि नहीं जो सब हड़प लें
हम हैं राजनीतिज्ञ

जो हमारे काम का है वो हम छाँट लेते हैं
तुम कर्म करो फल की चिन्ता मत करो
फल हम ले लेंगे
आखिर मित्र हैं तुम्हारे
आओ कर्म और फल को
आधा-आधा बाँट लेते हैं

❄❄❄

जीने की आज़ादी

नहीं चाहिये धन और दौलत
नहीं चाहिये महल दुमहले
नहीं चाहिये नाम और शोहरत
नहीं चाहिये झूठे मेले
एक चाहिये छोटा सा घर
बैठ जाऊँ मैं जिस में छुप कर
दुनिया के इस छल फ़रेब से
ख़ुदा बचा ले हर इक ऐब से
कहीं किसी जंगल में जा कर
झूम-झूम कर नाचूँ गाऊँ
भूल जाऊँ दुनिया के चक्कर
आज़ादी का पर्व मनाऊँ
एक बना छोटी सी कुटिया
उसके भीतर मैं सो जाऊँ
लोगों की तीखी नज़रों से
बच जंगल में मैं खो जाऊँ
या फिर दे दें मुझे सहारा
नदियाँ पर्वत घाटी वादी
मुझे चाहिये सादा जीवन
सुख से जीने की आज़ादी

❋❋❋

कुछ सफे

कुछ याद रहे
कुछ भूल गये
कुछ मन में अटकते रहे
इस तरह हमारे जीवन के
पल-पल छिन के
कुछ सफे पलटते रहे
कोई पन्ना कोरा सा था
कुछ पर कुछ नाम लिखे थे
इक पीले जर्जर काग़ज़ पर
कुछ धुँधले चित्र दिखे थे
कुछ पृष्ठ साथ में चिपक गये
कैसे इनको खोलूँ देखूँ
जाने क्या इनमें लिखा हुआ
अहसास तड़प कर बिलख गये
कुछ हँसा गये कुछ रुला गये
कुछ हौले-हौले बुला गये
कोरे काग़ज़ भी अनदेखा
अनजान संदेशा सुना गये
कुछ फूलों से सहलाते रहे
कुछ काँटो से खटकते रहे
इस तरह हमारे जीवन के
कुछ सफे पलटते रहे

❋❋❋

जीवन का निचोड़

कुछ जोड़ा
कुछ तोड़ा
कुछ मोड़ा
ज़िंदगी की
सारी परिभाषाओं का
यही एक
निचोड़ रहा
कुछ सहा
कुछ कहा
कुछ शेष रहा
जीवन का सारा जल
इन्हीं धाराओं में
हो कर बहा
कुछ खोया
कुछ पाया
कुछ पाकर गँवाया
कुछ गँवा कर पाया
संक्षेप में
जीवन के
लेने देने का
कहने सुनने का
खोने पाने का
यही सफ़र रहा

❊❊❊

उसे काम पर जाना है

वह, औरत
कुछ याद करती है
कुछ सोचती है
फिर सिसक कर रोती है
पोंछ कर आँसू
पक्का करती मन को
सचेत करती तन को
फिर खाना पकाती है
बर्तन धोती है
यह तो रोज़ का काम है
फिर आता है
पति नाम का पहरेदार
भाग्य और समाज ने
उसको बनाया जिसका कर्ज़दार
रोज़ रात को पी कर आता है
खाना खा कर उसे मार-मार कर
अगले दिन पीने के
पैसे वसूलता है
ठीक वैसे
जैसे ऋणदाता अपना ऋण
कभी नहीं भूलता है
वह रोती हुई उठती है
अपने ज़ख्मों पर
ख़ुद मरहम लगाती है

रो-रो कर दो ग्रास खाती है
एक दर्द निवारक गोली खा कर
सो जाती है
क्या करे
कल सुबह उसे काम पर जाना है
बच्चों के खाने के लिये
पति के पीने के लिये
पैसा जो कमाना है

❋❋❋

किस्मत और हिम्मत

दिल में छुपी हलचलें अपनी
कभी दिखाना मत
कभी किसी को अपने दिल का
हाल सुनाना मत
कोई किसी के दुख से दुखी हो
ऐसा कम होता है
अगर कोई रोता है तो
अपने दुख से रोता है
यह है कड़वा सच
मगर मैंने देखी है दुनिया
ये कड़वे सच देख-देख कर
बड़ी हुई भोली मुनिया
सुन कर किसी के मन की व्यथायें
लोग हँसे पीछे से
फिर क्यों हम उनको दिखलायें
हम हैं उनसे नीचे
अपनी हिम्मत से ही किस्मत
अपनी हमें बनानी
अपने दुख की गाथा हमको
मन के बीच छुपानी
हिम्मत जब मानव करता है
मदद ख़ुदा करता है
हारे वह जो किस्मत और
हिम्मत को जुदा करता है

❄❄❄

सड़क जड़ होकर भी

सड़क भाग रही है
या भाग रहे हैं लोग
या दोनों भाग रहे हैं
दोनों अपने लक्ष्य तक
पहुँचना चाहते हैं
है अजब संयोग
सड़क जड़ होकर भी
पहुँच जाती है
अपने गंतव्य तक
मानव चेतन हो कर भी
कभी रुक जाता है
कभी भटक जाता है
कभी सड़क के किसी
मोड़ पर
चौराहे या दोराहे पर
समाधिस्थ हो जाता है
सड़क फिर भी
चलती जाती है
बिना रुके
बिना भटके

❊❊❊

मीठी पुरवाई

ठुमक-ठुमक आई पुरवाई
वन उपवन में धूम मचाई
गई द्वार पर किसी मीत के
बाँसुरिया सी दे पुकार
वह लौट गई था बंद द्वार
चिहुँक कर गई फिर
खेत-खेत पात-पात
गाता था बिरहा किसान
बैठ कर मचान पर
सूने हैं तुम बिन घर द्वार सारे
दूर देश से मिलने
आई पुरवाई
तुम भी अब आ जाओ
बिरहिन पुकारे
झाँक-झाँक हर मौसम ने
ले ली विदाई
ठिठक कर खड़ी रही
मीठी पुरवाई
ठुमक-ठुमक आई पुरवाई
वन उपवन में धूम मचाई

❄❄❄

वह सोचता है

वह अपनी जड़े छोड़ कर
निकला था दुनिया देखने
हवा में उड़ता-उड़ता
एक सुन्दर से उपवन की
सोंधी मिट्टी में जा कर छुप गया
सोचा थोड़ा आराम कर लूँ
पर मिट्टी ने ऐसा पकड़ा, प्यार में ऐसा जकड़ा
कि बदल गया उसका रंग
सीख लिये मानव जैसे ढंग
शाखाओं पत्तों फूलों फलों से बना लिया पूरा परिवार
जड़ में दबा बैठा वह
निहारता रहता अपना संसार
पर उसका दिल भर-भर आता
जब माली उसके पुराने साथियों
उसके जर्जर पीले पत्तों को तोड़ कर
निरासक्त भाव से डाल देता धरा पर
उसके नव तरुण पल्लव भी
पुराने साथियों का रस चूस कर
धक्का दे कर हँसते उसकी जीर्ण शीर्ण दशा पर
नये लोगों को स्थान देने के लिये
पुराने लोगों को जाना होगा
यही प्रकृति का नियम है
क्या मानव की दुनिया में भी ऐसा ही होता है
क्या उसके घर की नींवें और दीवारें भी
मेरी तरह सिसकती होंगी
अपने वृद्ध साथियों के लिये
वह रोज़ सोचता है

❄❄❄

ख़ामोश गूँज

कभी इससे कभी उससे कभी खुद से बात की
इस तरह हमने रोज़-रोज़ दिन से रात की
फिर हुए ख़ामोश अपनी बेबसी पे हम
पर ख़ामोशियों में भी हमसे मुलाकात की
अपनी ही ख़ामोशी ने हमला हम पे किया
बदलाओ सब कुछ हमको तुम्हें किसने मात दी
हम सोचते ही रह गये बतलायें क्या इन्हें
शायद हमारी बेबसी ने ही हमको मात दी
कमज़ोरियों का अपना इल्ज़ाम दें किसे
अपनी तबाहियाँ तो अपने ही साथ थीं
करना बहुत था चाहा पर कुछ न कर सके
शायद ये बदनसीबियाँ ही मेरा आघात थीं
किससे करें शिकायत करें किससे हम गिला
जो कुछ भी हुआ वो मेरी अपनी बात थी
मेरी ख़ामोशियों ने फिर भी न मुझे छोड़ा
चारों तरफ़ से गूँज कर करती उत्पात थीं
तुम ही बताओ किससे कहें अपने दिल का हाल
हँस कर वो आगे बढ़ गये जिनसे भी बात की

❊❊❊

सौदा यादों का

बचपन से आज तक
मेरे पास यादों के
बड़े-बड़े ख़ज़ाने भरते गये
उन ख़ज़ानों में से
मैंने कुछ नोट निकाल कर
भुना कर रख लिये
जब जी चाहता है
उन नोटों से
कुछ यादें ख़रीद लाती हूँ
सौदे में कभी कुछ फूल
और कभी कुछ काँटे मिल जाते हैं
कभी कुछ ज़ख्म खुलते हैं
कभी कुछ सिल जाते हैं
मेरे बैंक के नोट
कभी ख़त्म नहीं होते
नोट खर्च करके
हम कभी हँसते हैं कभी रोते
कैसा सौदा है यह यादों का
ख़ुद ही तोड़ते हैं
ख़ुद ही जोड़ते हैं
सौदा यादों के वादों का

❊❊❊

सुबह को आना ही है

क्यों उदासी की ठंडक में जलता है तू
मोम सा मन ही मन क्यों पिघलता है तू
तेरे मन में सवालों का अम्बार है
बन के निर्भय उन्हें हल है करना तुझे
खोल दे बन्द दरवाज़े मन के सभी
सोचना क्या पहल तो है करनी तुझे
पंख घायल हैं तो क्या हुआ हमसफ़र
कर ले हिम्मत न रुकना तू मग में कहीं
उड़ जा विस्तृत गगन तक तू हो कर निडर
रोके तुझको कोई ऐसा जग में नहीं
मन की शंकाओं का त्याग करके निकल
लक्ष्य की ओर अपने तू बढ़ता ही चल
तू जो चाहे सभी कुछ इसी जग में है
धरती आकाश नीचे तेरे पग में है
कर के हिम्मत जो निकले वो होता सफल
कर्म करने से ही पाता मानव है फल
हर अँधेरे के पीछे छिपी रौशनी
रात के बाद सुबह को आना ही है
मन में जो ठान कर तू निकल है पड़ा
लक्ष्य तेरा जो तुझको वो पाना ही है

❄❄❄

जीवन का दर्शन संघर्ष

ता थई ता थई ता थैया
नाचो गाओ हाँ भैया
हँस कर सारे काम करो
जग में ऊँचा नाम करो
सा रे गा मा पा धा नी सा
गा कर जीवन में रस बरसा
क्या जीवन संगीत बिना
सुख में दुख में गा गाना
धीरज मिलता गाने से
भूलें दर्द ज़माने के
हँसते-हँसते जीना सीख
कभी न निकले मन से चीख
हँसने से सब साथ हँसें
रोने से सब दूर भगें
जीवन का है दर्शन एक
सुख हैं कम और दुख अनेक
फिर भी बीत रहे हैं वर्ष
जीवन का दर्शन संघर्ष
ता धिन ता धिन धिनक धिना
क्या जीवन संघर्ष बिना
जीवन की मुश्किल राहों पर
बढ़ जा तू पैयाँ-पैयाँ
तुझको तेरे लक्ष्य मिलेंगे
मत घबरा मेरे भैया

❄❄❄

आज के राधा-कृष्ण

वह बहुत बड़े नेता थे
वह निपुण क्रेता और विक्रेता थे
नैतिकता नियम उसूल आचार विचार
सबका व्यापार था
आखिर उन पर देश का दारोमदार था
उनके चाहने वाले उन्हें कृष्ण कन्हैया कहते थे
उन्हें चाहने वालियों की भी कमी नहीं थी
पर एक अबला गोपी उनमें भी सही थी
उसने साफ़ कह दिया
मैं राधा नहीं रुक्मिणी बनना चाहती हूँ
मैं तो सारी उम्र आपके साथ रहना चाहती हूँ
कन्हैया जी सकते में आ गए
यह राधा को क्या हो गया
और अगले दिन राधा ऐसी गायब हुई
कि फिर कभी न मिली
पर कन्हैया जी आज भी बड़ी शान से
रुक्मिणी के साथ देश विदेश घूम रहे हैं
समय-समय पर
गठबंधन के साथ गंगा नहा कर
भगवान के दर्शन कर रहे हैं
चाहने वालों को दर्शन दे रहे हैं
और नैतिकता पर भाषण दे रहे हैं

❊❊❊

कहाँ जायें

एक रात बरसात की
दिखाती है कितने रंग
कहीं रिमझिम वर्षा के साथ
छम-छम बरसती हैं
बिरहिन की अँखियाँ
कहीं किसी को रस से भिगोतीं
नन्ही-नन्ही बुँदियाँ
कहीं कोई महलों में
मल्हार गा रहा
कोई झोंपड़ी में
सूनी सेजें सजा रहा
टप-टप टपकती छत के नीचे
सिमटते सिकुड़ते ठिठुरते शरीर
कोई भी कोना तो सूखा नहीं
बारिश की बूँदों सी बिखरती तकदीर
फट रहा है आसमान
आसमानी छत के नीचे
दिशाओं की चादर ओढ़कर
सोनेवाले कहाँ जायें
टूट रहे किनारे
नदियों और नालों के
किनारा ढूँढने वाले
कहाँ जायें

❄❄❄

एक पत्र माँ की ओर से

ओ मेरे लाल
मेरे प्यारे अपने
पूरे करने हैं अभी तुम्हें
अपने ढेरों प्यारे सपने
कुछ सीख तुम्हें सिखलाती हूँ
दुनिया तुमको दिखलाती हूँ
जग में सब लोग न झूठे हैं
न सारी दुनिया है सच्ची
कभी बुरा छुपा अच्छाई में
कभी बुरे में भी अच्छाई है
यह अनुभव हमको सिखलाता
क्या बुरा और क्या अच्छा है
हर जीव जो जग में है आता
उस एक प्रभु का बच्चा है
लोगों के मुखौटे पढ़ना तुम
तब उनकी मूरत गढ़ना तुम

हर शत्रु मित्र किसी का है
हर मित्र किसी का है शत्रु
बातें तुम सबकी सुनो सदा
चाहे हो मित्र चाहे शत्रु
बातें तुम सबकी सुनो सदा
पर सोचो अपनी बुद्धि से
अपने विश्वास विचारों से
अपना पथ स्वयं प्रशस्त करो

अपने गुण सद्व्यवहारों से
लाखों मिल जायें पड़े हुए
पाकर न उन्हें इतराना है
उनसे अमूल्य है वह रुपया
जो मिला बहा के पसीना है

पुस्तकों से मित्रता तुम रखना
इन से बढ़ कर न मित्र कोई
फिर अपनी मधुर कल्पना में
निर्मित कर लेना चित्र कोई
पर सूरज चाँद सितारों से भी
बातें तुम करते रहना
पशु-पक्षी फूल पत्तियों से
मुलाकातें तुम करते रहना
नीला अम्बर नीला सागर
पर्वत घाटी नदियाँ झरना
सबसे मिलते जुलते तुम रहना
इन सबसे दूर न तुम रहना

न देख बड़े को घबराना
न छोटे को तुम ठुकराना
दें बड़े सीख जो भी तुमको
छोटों को वह तुम सिखलाना
धोखा न किसी को तुम देना
न ख़ुद भी धोखा खाना तुम
अच्छों से अच्छे रहना तुम
पर बुरों को माफ़ न करना तुम

न अन्याई बन कर रहना
न अन्याय को सहना तुम
गीता में प्रभु ने यही कहा
कि पाप है अन्याय सहना
तुम अत्याचारी न बनना
पर अत्याचार न तुम सहना
न भेड़ चाल में तुम पड़ना
न भीड़ का हिस्सा बनना तुम
जो हो निर्णय अपना रखना
न बनो मूर्ख का किस्सा तुम
जब सबकी बातें सुन लेना
जब सबकी बात समझ लेना
तब एक सन्तुलित निर्णय से
बस छाँट सत्य को तुम लेना
अच्छी बातों को चुन लेना
जो बुरी लगें उनको तजना
सब तरह तरह के लोग यहाँ
अपनी-अपनी सबकी रचना
आँखों में जब आँसू आयें
न उन्हें रोक कर रखना तुम
जो-जो उदासियाँ हैं मन में
उनको बह जाने देना तुम
पर यह भी याद सदा रखना
न कभी भूलना हँसना तुम
हँसना मुस्काना जीवन है
ख़ुशियों को कभी न ग्रसना तुम

साहस से जीवन को जीना
हिम्मत से तुम आगे बढ़ना
जीवन तो है संघर्ष सदा
जीवन भर तुमको है लड़ना
ख़ुद पर विश्वास सदा रखना
तुम सहनशीलता भी रखना
जीवन के इन संघर्षों को
हँस कर सहना न तुम थकना

जब कभी याद आये मेरी
यह चिट्ठी मेरी पढ़ लेना
मेरे अपने मेरे सपने
पूरे तुमको ही हैं करने
मेरे और अपने सभी लक्ष्य
हे पुत्र! पूर्ण तुम कर लेना
माँ के जीवन को सफल करना
यह श्रद्धांजलि माँ को देना

❄❄❄

दिल में छुपा बच्चा

भगवान की बनाई कृतियों में से मानव सर्वाधिक अद्वितीय कृति है
सबका अपना-अपना व्यक्तित्व और अपनी-अपनी मनोवृति है
किन्तु एक विशेष बात सबमें एक सी होती है कि
हर दिल में एक बच्चा छुपा रहता है
उसका जब जी चाहे दिल और दिमाग़ में आकर
माँ-बापू की बचपन के घर की गलियों की और
अपने बचपन की याद दिला देता है
व्यक्ति अपने बचपन को याद करके कभी रोता है, कभी मुस्कुराता है
किसी को बच्चों को देख कर अपना बचपन याद आ जाता है
सुभद्रा जी की पंक्तियाँ-
"मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी
नन्दन वन सी गूँज उठी वह छोटी सी कुटिया मेरी"
ये छुपा हुआ बच्चा जब आवाज़ लगाता है
तब बड़े से बड़ा, कठोर से कठोर व्यक्ति भी
सब कुछ विस्मृत कर अपने बचपन की यादों में खो जाता है
मैंने भी अपना बचपन देखा अपनी पोती के बचपन में
ऐसा सुख तो कभी मिला न जो पाया है अब पचपन में
शरीर हमारा कितना ही वृद्ध हो जाये
पर अन्दर बैठा यह बच्चा सदा बच्चा ही रहता है
जिसे खिलाने के लिये, पढ़ाने के लिये, सुलाने के लिये
माँ पीछे-पीछे भागती थी रात को लोरी गा कर सुलाती थी
आयु के हर पड़ाव में यह बच्चा और अधिक मुखर होता जाता है
शायद तभी सब कहते हैं बच्चा बूढ़ा एक समान
यही बचपन से बुढ़ापे तक की यात्रा की इति है
बुढ़ापे में भी हर एक के अन्दर रहता है एक बच्चा विद्यमान
सत्य ही मानव भगवान की अद्वितीय कृति है

❄❄❄

दिल न काबू में आया

समझाया दिल को हमने बहुत पर दिल काबू में न आया
दुनिया को अपना कैसे कहें जब दिल ही न अपना हो पाया
इस दिल के अन्दर हमने बहुत से राज़ छुपा कर रखे थे
पर इस दिल में तो शायद जगह नहीं राज़ उससे छुपाया ही न गया
ख़ुशियों के ख़ज़ाने लेने चले पर ख़ुशियां हमारी हो न सकीं
जिसका दिल ही न अपना हो तज देता उसे अपना साया
हम अपने सारे रंजो ग़म इस दिल को सुनाया करते हैं
आँखों ने जो कुछ भी देखा इस दिल तक हमने पहुँचाया
दिल तो अपना ही होता है पर दिल तो अपनी करता है
इसने हमसे जो कुछ चाहा हमसे ही हमेशा करवाया
हमसे सब कहते हैं तुम दिल को काबू में करना सीखो
काबू हम पर करके ये दिल अन्दर ही अन्दर मुसकाया
हमने तो अपना दर्द भरा अफ़साना तुमसे कह डाला
ये दिल ही बतायेगा हमको ये भाया उसे या न भाया
कहते हैं अपने रंजो ग़म दुनिया से छुपा कर रखा करो
अफ़साने जीभ को भेजे मगर दिल ही काबू में न आया
इस दिल की शिकायत क्या कीजै है अपना पर अपना ही नहीं
जितना अपना समझा इसको उतना ही इसने तड़पाया
हमको को सताया सारी उमर उसका बदला अब लेंगे हम
रुक जा दिल न बढ़ आगे अब होंगे हम न हमारा साया

❊❊❊

कब आओगे साँवरिया

तुम भूल गये गोकुल मधुबन
भूले वृन्दावन की गलियाँ
दीपक यादों के जला लिये
तुम कब आओगे साँवरिया
आओ मुरली के बजैया तुम
मन मोहन रास रचैया तुम
मैं माखन मिश्री ले आई
गैयों के संग चली आई
घर द्वार छोड़ कर आई हूँ
मैं ओढ़ के काली कामरिया
तुम कब आओगे साँवरिया

जमना का तट सूना तुम बिन
सूनी कदम्ब की छैंया है
सब कुंज निकुंज पुकार रहे
कित मेरा कृष्ण कन्हैया है
मेरे नैना तक-तक हारे
बरसी नैनों की गागरिया
तुम कब आओगे साँवरिया

सब गोपी ग्वाले बुला रहे
नन्द नन्दन अब तो आ जाओ
मुरली की धुन पर हम नाचें
जादूगर मनहर आ जाओ
मैं श्याम चिरैया बन गाऊँ

मोरे श्याम-श्याम तुम आ जाओ
सारी सृष्टि भी थिरक उठे
जब बजे श्याम की बाँसुरिया
तुम कब आओगे साँवरिया

मुझको दे जाती हैं घातें
उद्धव की ज्ञान भरी बातें
दिल में दिमाग़ में आँखों में
न कहीं ज्ञान के लिये जगह
मेरे तो रोम-रोम में बस
है श्याम रात है श्याम सुबह
फिर और जगह अब नहीं वहाँ
रहता है जहाँ पर साँवरिया
मैं बनी श्याम की बावरिया
तुम कब आओगे साँवरिया

क्यों भूल गये गोकुल मधुबन
क्यों भूले वृन्दावन की गलियाँ
दीपक यादों के जला लिये
तुम कब आओगे साँवरिया

❊❊❊

जिसका इक निश्चिय अटल है
पथ की बाधाओं से बन्धु
लड़ अकेला-बढ़ अकेला

रैन तूफ़ानी अँधेरी
कोई ज्योति न दिखाये
करो प्रज्जवलित काया अपनी
निकल पड़ो वह ज्योति जलाये
चारों ओर ज्योति फैला कर
काली रैना दूर भगा कर
अपने दृढ़ निश्चय के बल पर
अपनी आशाओं की मूरत
गढ़ अकेला-बढ़ अकेला
बढ़ जा अकेला- बढ़ जा अकेला

❋❋❋

सुना है

सुना है-
इन्सान के एक कन्धे पर शैतान
दूसरे कन्धे पर भगवान बैठा है
बीच में एक सिर होता है
जिसके अन्दर दिमाग़ नाम की चीज़ होती है
जिससे सोच-सोच कर
इन्सान कभी हँसता कभी रोता है
कैसी विडम्बना है
दोनों उसे अपनी ओर खींचते हैं
उसके विचारों को
अपने विचारों से सींचते हैं
अच्छाई और बुराई की
इस खींचतान से
इन्सान ज़िंदगी भर जूझता रहता है
शैतान की तरफ़ झुकता रहता है
भगवान को पूजता रहता है
काश इन्सान का दिमाग़
शैतान की ओर न झुके
शैतान की नहीं अपितु
भगवान की बात मानने लगे
तो मिट जाये सारी भ्रान्ति
संसार में फैल जाये
प्रेम और शान्ति

❊❊❊

तार के तार

तार-तार के तार से
जुड़ जाते हैं तार
तार-तार के तार से
नर होवे निस्तार
जुड़ जावें जब तार के
बन्धन से सब तार
तब ही जानो आयेंगे
अन्तर में करतार
कर्ता धरता है वही
वही एक भरतार
बँध कर उसके तार में
पावे नर सुख सार
मिले तार तब तारता
नर को तारन हार
तरनि ले कर तार की
तैर तरै भव पार
तैर जाये भव पार
तार जुड़ जाये रब से
मोह माया दुनियादारी छुट जाये सब से
तेरा मेरा छोड़ कर
मिल जायें सब तार
तार-तार मिल जायें जब
मिल जायें करतार

❄❄❄

लहरें ही लहरें

मचल कर समन्दर की
छाती पे आतीं
उछल कर हैं आतीं
मचल कर हैं आतीं
उफनती चली आतीं
लहरें ही लहरें
कहीं दूर से आके
मुझको बुलातीं
सघन घन स्वरों से हैं
मुझको सुलातीं
लरजती चली आतीं
लहरें ही लहरें
कभी जब हृदय में हों
तूफ़ाँ समाये
कभी वो हैं आयें
कभी वो हैं जायें
गरजती चली आतीं
लहरें ही लहरें
उछल कर, मचल कर
गरज कर, लरज कर
बहल कर, दहल कर
गहर कर, हहर कर
वो इठलाती आती हैं
लहरें ही लहरें
उफनती चली आतीं
लहरें ही लहरें

❄❄❄

अगर सोचते हो वक़्त का तकाज़ा है

बंद कर लो आँखें हर तरफ़ से
वक़्त का तकाज़ा है
चारों तरफ़ फैला हुआ
भ्रष्टाचार अनाचार अत्याचार
हत्या अपहरण बलात्कार
तस्करी की कहानियाँ
नशे में डूबी जवानियाँ
अपनों से विश्वासघात
नित नये घात प्रत्याघात
भुला दो उन शहीदों को
जिन्होंने न्यौछावर कर दिये प्राण
उफ़ वे लोग भी कितने थे नादान
आज लोग जाग चुके हैं
देशप्रेम से पहले ख़ुद से प्रेम
आज का नया मन्त्र है
जानते हो न आज प्रजातन्त्र है
प्रजातन्त्र में सब स्वतन्त्र हैं
आज लोग अपने लिये जीते हैं
तुम भी जियो अपने लिये
तुम्हें क्या तुम्हारे सामने से
डोली जाती है या जनाज़ा
कबूतर की तरह बंद कर लो आँखें
भूल जाओ आत्मा परमात्मा को
अगर सोचते हो कि
यह वक़्त का तकाज़ा है

❄❄❄

क्या नाम दूँ

जब भी मैं
अपनी अन्तर्निहित भावनाओं
मूक संवेदनाओं
भग्न अस्थाओं
खण्डित मान्यताओं
विडम्बनाओं विवशताओं
असफलताओं और निराशाओं के दर्द
न सह पाती हूँ
न कह पाती हूँ
तो मेरे सारे अहसास सिमट कर
मुझसे एक प्रश्न पूछते हैं
अपनी इस न कह पाने की
विवशता को
मैं क्या नाम दूँ
शराफ़त, भय या कायरता

❄❄❄

यादों के पल

कोई हमें बताए तो
बीते दिनों की याद के
साए हमें सताएँ क्यों
अच्छे बुरे जो पल जिए
अमृत या विष जो भी पिए
दिल में जो ज़ख्म थे किए
वो तो हमीं ने ख़ुद सिए
ग़र हमको कुछ नहीं मिला
इसका किसी से क्या गिला
फिर भी ये बेचैनियाँ हैं क्यों
आँखों में वीरानियाँ हैं क्यों
कोई मेरे दिन रात में
यादों की आँधियाँ चला
पल-पल मुझे रुलाए क्यों
कोई हमें बताए तो
बीते दिनों की याद के
साए हमें सतायें क्यों

❄❄❄

आस्था के पुष्प

आस्था के पुष्प
करती हूँ समर्पित
आज चरणों में तुम्हारे
तुम मिले तो मिल गया
रिद्धि, सिद्धि, नवनिधि का ख़ज़ाना
तुम मिले तो मिल गया
जीवन को जीने का बहाना
तुम ही मेरे देवता
तुम आस हो विश्वास मेरे
यह मेरा विश्वास अर्पित
आज चरणों में तुम्हारे
मेरे जीवन मीत तुम हो
हो तुम्हीं आधार मेरे
सृष्टि के रमणीयतम
प्रियतम तुम्हीं उपहार मेरे
तुम ही मेरी प्रीत
तुम ही मेरे गीत
तुम मन, प्राण मेरे
ये मेरे मन प्राण अर्पित
आज चरणों में तुम्हारे
आस्था के पुष्प
करती हूँ समर्पित
आज चरणों में तुम्हारे

❊❊❊

कुछ निशानियाँ

मेरी बगिया के हर पत्ते पर
हर तिनके पर, हर ज़र्रे पर
लिखी हुई हैं
मेरे एकाकी जीवन की
अनगिन, अनमिट
अनचीन्ही
कितनी कहानियाँ
कुछ हँसने की
कुछ रोने की
कुछ मीठे सपने खोने की
कुछ टूटे अरमानों वाली
कुछ उन्मुक्त उड़ानों वाली
कुछ अनचाही यादों वाली
या-
कुछ टूटे वादों वाली
कुछ अपनों से अन्ध मोह की
या-
कुछ अपनों के बिछोह की
वो अपने
जो दूर हो गए
दे कर अपनी
कुछ निशानियाँ
आज वही यादें हैं मेरे
जीवन की मीठी कहानियाँ

❄❄❄

आकर्षण

यह कैसा आकर्षण है
जो जोड़ता है मानव को प्रकृति से
कुदरत की एक-एक कृति से
उस अनजाने चित्रकार की
वर्त्तिका से लिखा गया
चित्रित किया गया प्रकृति का अनंत वैभव
क्या उसे सम्पूर्ण रूप से
आत्मसात कर पाना है सम्भव
धरती से आकाश तक
सौंदर्य का रोमांचक रूप निहित है
सूरज चाँद सितारों से
कण-कण उद्‌भासित है
नदियाँ झरने असीम सागर
सब कितने अद्‌भुत हैं
पृथ्वी की गहरी खाईयाँ घाटियाँ वादियाँ
उत्तुंग गगनचुम्बी पर्वत शिखर
हर रूप में प्रकृति मानव को
खींचती है अपनी ओर
ऐसा अलौकिक रूप जिसका ओर न छोर
पत्तों के बीच से सरसराती हवायें
न जाने क्या-क्या कह जाती हैं कर्ण में
मानव जुड़ता जाता है प्रकृति के कण-कण से
एक अजीब से आकर्षण में

❄❄❄

मोल-तोल की भाषा

आजकल कुछ लोग
एक नई भाषा सीखने लगे हैं
इस नई भाषा का नाम है
मोल तोल की भाषा
मुझे भी इसकी कुछ जानकारी मिली है
इस भाषा की नींव स्वार्थ से शुरु होती है
दोस्त और दुश्मन की पहचान कठिन होती है
इसमें सम्बन्धों के आधार थाली के बैंगन जैसे
या गंगा गये तो गंगा दास
जमना गये जमनादास की कहावत पर
आधारित होते हैं
इसमें सिखाया जाता है कि कैसे एक इन्सान
दूसरे को कुचल कर आगे बढ़ सकता है
कैसे कोई ख़ून के रिश्ते से भी धोखा कर सकता है
इस भाषा में मित्रता और प्रेम नहीं बल्कि सिखाया
जाता है
सामने वाले का निरीक्षण करना
उसे अन्दर बाहर से परखना
उससे मिलने वाले हानि लाभ का लेखा जोखा
कहीं मिलेगा तो नहीं धोखा
सारा अध्ययन सतत करना पड़ता है
कि क्या मिल सकेगा
कितना मोलतोल हो सकेगा
किन्तु क्या सब इस भाषा को
सीख कर अपना सकते हैं
शायद नहीं
क्योंकि अगर ऐसा हो गया
तो परिवार समाज और देश का क्या होगा

❄❄❄

बदलनी होगी दृष्टि

ज़िंदगी रोज़ बदल जाती है
जो आज है
वह कल नहीं थी
न कल होगी
परसों का तो भरोसा ही क्या
पल-पल बदलती ज़िंदगी की
बड़ी अजीब कहानी है
जो बात कल तक परम्परा थी
वही बात आज पुरानी है
शायद जो आज तय करेंगे
वह आने वाले कल के सन्दर्भ में बेमानी है
शायद हर नये दिन की नई समस्या को
समझने और सुलझाने के लिये
हर नये दिन की नई प्यास को बुझाने के लिये
उनसे जूझने के लिये
उनको बूझने के लिये
बदलनी होगी दृष्टि
बदलना होगा दृष्टिकोण
परम्पराओं के नाम पर
अब नहीं रह सकते मौन
नये युग की नई मुश्किलों के हल के लिये
ज्ञान की क्षमता का विकास करना है
नव जीवन में नव उल्लास भरना है
क्योंकि ज़िंदगी रोज़ बदल जाती है

❄❄❄

इत्तिफ़ाक ग़ज़ब का था

वो भी इत्तिफ़ाक ग़ज़ब का था
जब हम मिले और तुम मिले
वो भी इत्तिफ़ाक अजब सा था
जब दो से हम एक हो गये
कुछ दिन बड़े रंगीन थे
दुनिया जहाँ रंगीन थे
न कोई दुख और दर्द था
संसार पूरा स्वर्ग था
बीते थे कुछ दिन फिर अचानक
समय कुछ बदला सा लगा
फूलों के उपवन में जैसे
कोई काँटा आ लगा

सुख का समय छोटा सा था
किस्मत में कुछ खोटा सा था
बस बात बिगड़ती चली गई
ज़िंदगी बिखरती चली गई
कुछ मैंने कहा कुछ तुमने कहा
कुछ मैंने सहा कुछ तुमने सहा
जीवन ने दिखाया नया रंग
जीवन में छिड़ गई नई जंग
हम दोनों हो गये दूर-दूर
सब सपने हो गये चूर-चूर
किस्मत का कैसा खेला था
क्या सब दो दिन का मेला था

कितनी कुण्ठा कितना तनाव
वो दिन कितने संगीन थे
दिल और दिमाग़ में दर्द भरे
हम दोनों ही ग़मगीन थे
फिर इत्तिफ़ाक एक और आया
किस्मत ने नया रंग दिखलाया
गाँव से दादा जी ने आकर
देखा घर का विकट नज़ारा
मन में सोचा कैसा बन गया
मेरे पोते का घर प्यारा
हँसी ख़ुशी का नहीं है रंग
घर में जैसे छिड़ी है जंग
दादा जी ने पास बिठाकर
ऊँच-नीच हमको समझाई
प्यार कभी जो हमने किया था
उसकी हमको याद दिलाई
और अचानक हम दोनों की
आँखों में आँसू भर आये
जब हम पहली बार मिले थे
दोनों को वो दिन याद आये
दोनों ने फिर हाथ जोड़कर
माफ़ी माँगी इक दूजे से
याद आ गये इत्तिफ़ाक सब
गले मिले हम इक दूजे से

अब कोई दुख दर्द नहीं थे न ही हम ग़मगीन थे
घर में सब ख़ुश हम भी ख़ुश थे दुनिया जहाँ रंगीन थे
पल-भर में ही दूर हो गये सारे शिकवे और गिले
वो भी ग़ज़ब का इत्तिफ़ाक था जब हम इक दूजे से मिले

❊❊❊

मुझे आधार देना

बन्धु मेरे बस भरोसा है तुम्हारा
पक्के धागों से बँधा रिश्ता हमारा
जब मेरे अपनों ने ही मुझको तज दिया था
मेरे जीवन की हर राह को बंद कर दिया था
मेरे जीवन के हर दरवाज़े पर ताले लगे थे
सब मुझे नीचे गिराने को मतवाले हुए थे
मैं बंद थी ऐसे घर में
जिसमें कोई खिड़की या दरवाज़ा नहीं था
आस-पास काँटे ही काँटे थे
एक भी फूल ताज़ा नहीं था
हर आस का दामन छूट रहा था
स्नेह प्रेम का हर धागा टूट रहा था
चारों तरफ़ से घेर रहा था घना अँधियारा
दूर-दूर तक दृष्टिपथ पर नहीं था कोई उजियारा
ऐसे में मेरे बंद दरवाज़ों में से
एक किरण सी झाँकी
मैं उस अँधेरे में उठी
लड़खड़ा कर गिरने वाली थी
कि मेरे बन्धु तुमने मुझे गिरते-गिरते सम्भाल लिया
मेरे गिरते आत्मविश्वास को एक आधार दिया
कहते हैं जो गिरते को उठा ले वो ख़ुदा होता है
जो वक़्त पर सहारा दे वही अपना होता है
बन्धु मेरे याचना है कि भविष्य में भी जब
मेरे क़दम लड़खड़ायें, मेरे पग आगे न बढ़ पायें
तो मुझे सम्बल देना
मुझे आधार देना

❄❄❄

मिले जो तू

मिले जो तू
तो मेरे दिल को कुछ क़रार मिले
उजड़ते बाग़ को
इक बार फिर बहार मिले
बड़ी इनायतें कर दो
जो एक बार आओ
नहीं शिकायतें हमको
नहीं हैं कोई गिले
मेरे सहारे, मेरे दोस्त
हमसफ़र मेरे
कभी करो कुछ ऐसा
जुड़े ये टूटे सिले
सुनाई दे तेरी आवाज़
एक पल को अगर
मेरी ख़ामोशी को
फिर से नई आवाज़ मिले
मिले जो तू
तो मेरे दिल को
कुछ क़रार मिले

❊❊❊

हाँ, मैं विस्मित हूँ

हाँ- मैं विस्मित हूँ, कुण्ठित हूँ, आतंकित सी हूँ
इसी कारण निकलते हैं मेरी वाणी से
व्यंगबाण, शब्द शूल, शब्द बाण
क्यों न निकलें ऐसी बातें
मेरा मन खाता है पग पग पर घातें
यथा राजा तथा प्रजा, मिल रही है ईमान वालों को सज़ा
राजाओं के किस्से रोज़ आते हैं अख़बारों में
प्रजा की प्रतिक्रिया और प्रक्रिया भी आती है समाचारों में
तरह-तरह के भ्रष्टाचार
अपहरण क़त्ल व्यभिचार अत्याचार
लालच की सीमा पार, हो रहा है रिश्वत का प्रचार
सबकी नीयत में खोट है
रिश्तों में बँधे नोट और वोट हैं
जो बाँटे नोट उसको मिलें वोट
ईमानदारों को मिलती रहे चोट
किस दिशा में जा रहे हैं
मेरा देश मेरा समाज
ये कैसा गणतन्त्र है
कैसा है बापू का रामराज
काश आज हमारे पुराने नेता होते
तो ये नये-नये राजा और अभिनेता न होते
तो शायद मेरे पास न होते
विस्मय, कुण्ठा और आतंक के भाव
न होते व्यंग बाण, शब्द बाण के ताव
मैं अपनी हालत पर स्वयं अचम्भित हूँ
मैं क्यों विस्मित, कुण्ठित, आतंकित हूँ

❄❄❄

है कितनी अटपटी ज़िंदगी

मेरी ज़िंदगी, मेरी ज़िंदगी
कहते-कहते कटी ज़िंदगी
एक ज़िंदगी जिसको समझा
टुकड़ा-टुकड़ा बँटी ज़िंदगी

नहीं याद क्या कभी किसी दिन
जी कर देखी ख़ुद भी ज़िंदगी
अपनी-अपनी जिसको कहते
पल-पल, छिन-छिन घटी ज़िंदगी

किया आज क्या कल क्या होगा
सोच-सोच कर कटी ज़िंदगी
समय विभाग-चक्र में बँट कर
क़तरा-क़तरा छँटी ज़िंदगी

सोना जगना खाना-पीना
इसी चक्र में कटी ज़िंदगी
वर्षों जी कर पल में जाती
है कितनी अटपटी ज़िंदगी

ज़िंदगी अपनी सबसे है डरना
आगे क्या होगा सोच के मरना
जिसके सिर पर दो तलवारें
रहें लटकती वही ज़िंदगी
मेरी ज़िंदगी - मेरी ज़िंदगी
कहते-कहते कटी ज़िंदगी

❄❄❄

यही वर्तमान

आओ पुरानी यादों को भुला कर
कुछ नई यादें बना लें
अतीत की राहों को पीछे छोड़ कर
कुछ नई राहें बना लें
जीवन नाम है चलने का
न कि अतीत की गलियों में टहलने का
जब हम चाह कर भी
अतीत को खींच कर नहीं ला सकते
तो क्यों न उन लम्हों को उनके वक़्त के साथ छोड़ कर
कुछ नये लम्हों का निर्माण करें
अतीत के आँचल को जितना खींचेंगे
उतना ही बढ़ता जायेगा
रोज़ एक दिन अतीत बन कर उसमें जुड़ता जायेगा
अतीत की बुरी यादों को भुला देना
अच्छी यादों के ख़ज़ाने को
सावधानी से सहेज कर रख लेना
सिर्फ़ इसलिये कि उन्हें याद करके मुस्कुरा सको
जीवन भर की दौलत प्यार से रख सको
शेष भूल कर पीछे छोड़ कर
आगे बढ़ कर कुछ अच्छी नई यादें बना लो
वर्तमान को स्नेह से मन प्राण में बसा लो
आने वाले कल में यही वर्तमान
अतीत की यादें बन कर आयेगा
तुम्हें शान्ति देगा हँसायेगा

❄❄❄

तब आयेगा नया प्रभात

पल-पल गिन-गिन बीता दिन
तिनका-तिनका बीती रात
बीते बरस-बरस पलछिन
कब आयेगा नया प्रभात

कैसा यह जीवन का खेला
रोज़ लगे जीवन का मेला
मेले के इस रंगमंच पर
रोज़ चले अभिनय अलबेला
चारों तरफ़ लगा है मेला
मानव फिर भी रहे अकेला
किसी अनोखी चाह में रह कर
तरस-तरस कर काटे रात
कब आयेगा नया प्रभात

बूँद-बूँद से घट भर जाता
बूँद-बूँद से होता रीता
चमत्कार होगा बस इक दिन
इसी आस में रहता जीता
करे शान्ति की खोज
पढ़े कुरान बाईबिल गीता
नहीं जानता उसे मिले क्या
खट्टा मीठा या फिर तीता
कितने जतन करे क्या बनती
कभी भूल से बिगड़ी बात
कब आयेगा नया प्रभात

किन्तु मान कर अपनी गलती
कर प्रायश्चित् शुद्ध हृदय से
उसे अवश्य क्षमा मिल जाती
क्योंकि प्रभु तो बहुत सदय हैं
रखे जो विश्वास स्वयं पर
सुने आत्मा की आवाज़
उसके जीवन में न आये
कोई विपत्ति या उत्पात
तब आयेगा नया प्रभात
पल-पल छिन-छिन बीता दिन
तिनका-तिनका बीती रात

❄❄❄

बादल कितने रूप तुम्हारे

धरती के मनमीत सहारे
बादल कितने रूप तुम्हारे
कभी श्वेत हो कभी हो काले
कभी लगो तुम रुई के गोले
कभी सिर्फ़ घिर-घिर कर आते
प्यासी धरती को तरसाते
देख के काली-काली बदरिया
दादुर मोर पपीहा गाते
पर तुम खेलो चोर सिपाही
सूरज को दे अपनी गद्दी
चुपके से गायब हो जाते
हो फुहार बन कभी बरसते
झर-झर झरना बनो कभी
नन्ही नन्ही बुँदियाँ बन कर
गीत तीज के गाओ कभी
कभी बरसते छम-छम रिम-झिम
कभी झमाझम ताण्डव करते
कभी मधुर मृदंग से लगते
कभी ढमाढम ढोल बजाते
कभी लगी सुरमई रेशम से
और कभी बिजलियाँ गिराते
वन उपवन पर्वत नदी सागर
सब को अपना कहर दिखाते
महल झोंपड़ी सब पर बरसो

पर क्यों फाड़ के छत ग़रीब की
टप-टप-टप-टप अन्दर बरसो
देख तुम्हें धोबी डर जाता
कपड़े कैसे सुखायेंगे
न आओ तो कृषक रोयेगा
कैसे अन्न उगायेंगे
बिरहिन देखे जब-जब तुमको
आये बिदेसिया याद उसे
और बिदेसिया कालीदास बन
मेघदूत को याद करे
कहीं बना देते हो जलथल
कहीं बना देते हो मरुथल
शक्ति तुम्हारी देख-देख कर
बड़े-बड़े विद्वद्जन हारे
बादल कितने रूप तुम्हारे

❄❄❄

दुनिया के मेले

मेले दुनिया के चलते रहते सदा
जाने वाला चला ही जाता है
दे के दुनिया को अपनी कुछ यादें
तोड़ लेता वो जग से नाता है

फूल खिलते ही रहते हैं
अपने रंगों में खिलखिलाते हैं
भँवरे अपने ही प्यार में डूबे
गाते रहते हैं गुनगुनाते हैं

चाँद सूरज गगन के तारे भी
रोज़ आते हैं चमचमाते हैं
सारी कुदरत के रंग अपने में
डूबे रहते हैं मुस्कुराते हैं

सुबह आती है शाम आती है
रात अपने समय से आती है
रात थपकी लगा सुलाती है
चूम पलकें सुबह जगाती है

हर लहर हर तरंग सागर की
दूर क्षितिज को छू के आती है
दूर एकाकी चलती नौका को
बाहों में प्यार से झुलाती है

दूर मंज़िल पे बढ़ता इक राही
ऊँचे-ऊँचे स्वरों में गाता है
मेले दुनिया के चलते रहते सदा
जाने वाला चला ही जाता है

❋❋❋

आश्रय

हालातों से हताश एक बेसहारा
आश्रय ढूँढने निकला वृद्ध बेचारा
वृद्धाश्रम के द्वार पर टेर लगाई
अधिकारियों ने तनिक भी न देर लगाई
आकर किया स्वागत नियम बताये
कृपया पाँच लाख रुपए जमा करवायें
तत्काल सीट के लिये एक लाख और लगेंगे
अथवा पाँच लाख वाली सीट खाली होते ही
आपको नियमानुसार सूचित करेंगे
जैसे ही कोई सदस्य होगा भगवान को प्यारा
माननीय महोदय आपको मिल जायेगा सहारा

❄❄❄

ना तुम जानो ना हम जानें

क्यों दुखियारा है सुखीराम क्यों दुखीराम हँसता रहता
कोयले सा काला गौरचंद गोरे चाचा बन कर रहता
ना तुम जानो ना हम जानें दुनिया क्या गोरखधंधा है
है नाम नयनसुख जिस जन का वह क्यों आँखों से अँधा है
क्यों शाँति मासी करती रहती है रोज़ मोहल्ले में हल्ला
क्यों बूढ़े रासबिहारी को सब लोग बुलाते हैं लल्ला
यह रंग रंगीली नारंगी क्यों ना रंगी कहलाती है
जो दुनिया भर में घूमे है वह क्यों गाड़ी कहलाती है
जो दूध जमा वह खोया क्यों
हँसमुख महफ़िल में रोया क्यों
लक्ष्मी काकी लगा रही है फकीर चंद के घर में झाड़ू
भोला बैठा सोच रहा है अगला डाका कैसे डालूँ
शीला जी का शील शब्द से दूर-दूर तक नहीं है नाता
बेचारी माया के घर माया का अब तक खुला न खाता
रूपमती का रूप कहाँ है ज्ञानचंद क्यों लगाये अँगूठा
स्नेहा जी स्नेह नहीं है भागचंद से भाग्य क्यों रूठा
धर्मचंद कोई धर्म न माने धनीराम घूमे धनहीन
वीरबहादुर डर-डर मरता प्रेमचंद है प्रेम विहीन
नाम और उसके मतलब का रिश्ता पता नहीं लग पाता
कितना उल्टा-पुल्टा सब कुछ नहीं समझ में कुछ भी आता
फिर भी गरीब दास है देखो ढेरों रुपिया गिनता जाता
और अमीरचंद उसके द्वार पर चौकीदारी करता जाता

❄❄❄

मीत कोई गीत गाओ

मीत कोई गीत गाओ
गीत गाओ तुम मधुरतम
भर उठे उन्माद से मन
कूकती कोयल के स्वर को
आज मधु स्वर से लजाओ
मीत कोई गीत गाओ

प्रीत गूँजे गीत गूँजे
गीत की हर पंक्ति गूँजे
हो उठें गुँजित दिशायें
वो अमर संगीत गाओ
मीत कोई गीत गाओ

रसमयी हो सृष्टि सारी
लय में डूबें जीव धारी
भर उठे संगीत से जग
तुम जगत को जगमगाओ
मीत कोई गीत गाओ

❄❄❄

वक़्त के साथ

बुरा नहीं होता यादों को याद रखना
बुरा होता है वक़्त के साथ न चलना
वक़्त के साथ न चले तो वक़्त साथ छोड़ देगा
शायद अपनी अवज्ञा समझकर हमसे मुख मोड़ लेगा
हम पीछे रह जायेंगे बढ़ जायेगा जग आगे
शायद न पकड़ पायें उन्हें कितना ही पीछे भागें
वक़्त के साथ-साथ ज़रूरी है सोच को बदलना
वरना पड़ेगा हमें नये लोगों की आँखों में खटकना
रीति-रिवाज-परम्परायें जीवन के साथ चलते हैं
लेकिन समय-समय पर जीवन के सन्दर्भ भी तो बदलते हैं
फिर क्यों न समझौता कर लें वक़्त की गति के साथ
नये और पुराने को मिला कर वक़्त से मिला लें हाथ
वरना कहीं पड़ न जाये केवल हाथों को मलना
बुरा होता है वक़्त के साथ न चलना
बुरा नहीं होता यादों को याद रखना
बुरा होता है पुराने विचारों को याद रखना
बुरा होता है वक़्त के साथ न चलना

❋❋❋

हँसे हम पे किस्मत हमारी

हँसी ढूँढने के लिये जब भी निकले
हैं भर आये आँखों में आँसू हमेशा
रहे सैंकड़ों दर्द दिल में समेटे
दिखाते रहे हम तो ख़ुश हैं हमेशा
जलाये दिये रौशनी के लिये जो
वो देते रहे हैं अँधेरे हमेशा
गुजारीं जो रातें थी करवट बदलते
वो ग़म के सवेरे ही लाईं हमेशा
न शिकवा किसी से न कोई शिकायत
हमें ज़िंदगी ठगती रहती हमेशा
न कोई अपना न कोई पराया
है झेली ये वीरानगी, हमने हमेशा
गुनाह क्या हुए हमसे अब तो बता दो
सहे तेरे सारे सितम हैं हमेशा
न मंज़िल है कोई न कोई ठिकाना
रहे हम तेरे ही करम पर हमेशा
हँसेगा भला कौन हम पर भला क्यों
हँसे हम पे किस्मत हमारी हमेशा

❊❊❊

हर दिशा खो गई

न कोई दिया न कहीं रौशनी
कौन से मोड़ पर रुक गई ज़िंदगी
भावनायें नहीं, कामनायें नहीं
कोई दुख-दर्द और यातनायें नहीं
हृदय में मस्तिष्क में शान्ति ही शान्ति है
जाने यह सत्य या भ्रान्ति ही भ्रान्ति है
यूँ लगे जैसे जीवन में सन्तोष है
क्या छुपे ज्वार का कोई अवशेष है
ज़िंदगी के रवैये से हैरानी है
कैसी उलझन है कैसी परेशानी है
कोई राहें नहीं कोई मंज़िल नहीं
कोई हद भी नहीं कोई साहिल नहीं
लग गये ताले जैसे हर इक सोच पर
सोचते-सोचते थक गई ज़िन्दगी
राहे गुम हो गईं हर दिशा खो गई
कौन से मोड़ पर रुक गई ज़िंदगी

❄❄❄

धागा प्रेम का

चटका कर न तोड़ दो धागा प्रेम का
लगा दी गाँठ तो भी जोड़ तो जोड़ ही रहेगा...
दिल में पड़ी गाँठ तो कैसे दिल रहेगा पक्का
कितना ही मज़बूत बने किरच-किरच टूटेगा
ज़रा सी गरम हवा से भी
तूफ़ानों में फँस जायेगा
प्रेम प्यार अपनापन हमदर्दी जैसी
भावनाओं को मानो काल ग्रस जायेगा
समय-समय पर गाँठ
प्रेम के बीच अटक जायेगी
अटकी जो गाँठ तो
प्रीत भटक जायेगी
भटकी जो प्रीत तो
कुछ बोल नहीं पाओगे
प्रेम के धागे में पड़ी गाँठ
कभी खोल नहीं पाओगे
टुकड़ों को कभी भी
जोड़ नहीं पाओगे
जीवन को नया मोड़ दे नहीं पाओगे
अच्छा यही है कि धागा प्रेम का
कभी भी न टूटे
अपने कभी न रूठें
बंधन प्रेम का
कभी भी न छूटे

❄❄❄

मैं मुखौटा लगाकर

मैं मुखौटा लगाकर
ज़िंदगी जी रही हूँ
मैं मुँह में अमृत घोल
ज़हर दिल में पी रही हूँ
मैं तो चली थी
दुनिया का दिल जीतने
अपनों के दिलों में ख़ुशियाँ भरने
नहीं जानती थी
यह तो एक अनहोनी थी
जिसे मैं चली थी करने
जितने प्रयत्न करती रही
उतना ही हारती रही
जितनी ख़ुशियाँ बाँटनी चाहीं
उतना ख़ुद को मारती रही
बन्धु ख़ुशियों के दिये घाव
दिल की गहराइयों में छिपा कर
सुइयों की नोक से सी रही हूँ
मैं दुनिया में बस रही हूँ
मुखौटा लगाकर हँस रही हूँ
घाव सी रही हूँ
ज़हर पी रही हूँ
ज़िंदगी जी रही हूँ

❄❄❄

पूजी जाती है नारी जहाँ

सदियों पर सदियाँ बीत रहीं पर नारी के हालात वहीं
वह सब पर होती न्यौछावर पर उसका अपना कोई नहीं
बचपन में पिता यौवन में पति वृद्धा हो पुत्र के घर रहती
उसका अपना घर कोई नहीं फिर भी सबको अपना कहती
आँखों में अश्रु छिपे हुए मुस्कान होंठ पर रखती है
यह चित्र एक नारी का है जो दो रूपों में जीती है
हाँ एक बार शंकर ने भी वह कटुक हलाहल पीया है
फिर नीलकंठ बन सृष्टि में पद अमर ईश का जीया है
पर यह नारी तो दिन भर में न जाने क्या-क्या पीती है
हर पल न जाने कितनी बार वह कटुक हलाहल पीती है
घर में जो व्यंग बाण लगते उनकी नोकों को सहती है
शंका संदेह या बेवफ़ाई के तूफ़ानों में बहती है
टीचर, डॉक्टर या प्रोफ़ेसर वह किसी नौकरी पर जाये
पर सबकी एक तमन्ना है वह लौट समय पर घर आये
हो जाये किसी कारण देरी घर का माहौल बिगड़ जाता
न जाने किन-किन बातों का सारा बखिया ही उधड़ जाता
न कोई जानना चाहेगा उसके अन्तर की पीड़ा को
घर के बाहर में मिली हुई किस-किस तनाव की ब्रीड़ा को
हर क़दम-क़दम पर मर्यादा इज़्ज़त खोने का डर रहता
चाहे हो घर या हो दफ़्तर क्यों बलात्कार का भय रहता
यह माता, बहन, पत्नी, बेटी हर रूप में जीना जाने है
पति, पिता, भाई और बेटे को बलिदान प्राण कर पाले है
लेकिन उसकी गलती हो या न हो पलभर में उसे दुत्कार मिले
वह करे शिकायत न कोई पर उससे दुर्व्यवहार गिले
पूजी जाती है नारी जहाँ देवता वहाँ पर रहते हैं
नारी शक्ति के प्रति वचन ऐसे ऋषिगण सब कहते हैं
कब इस समाज के देव पुरुष जानेंगे नारी की शक्ति
कब मन से देंगे नारी को आदर सत्कार प्रेम भक्ति

❊❊❊

बचपन का वो अम्मा का घर

दाता दे दो दान मुझे बचपन का वो अम्मा का घर
जहाँ खेलते थे हिलमिल कर गुड्डा गुड़िया और घर-घर
मेरे घर का आँगन जिसमें चिड़ियाँ गाती थीं गाना
रोज़ सवेरे भाई-बहन हम जिन्हें खिलाते थे दाना
मेरे पिता जी का वो कमरा जिसे बोलते थे बैठक
सख्त हिदायत हमको थी यह वहाँ नहीं होगी ठक-ठक
बड़ी शान्ति होती थी उसमें कभी झाँकते थे जाकर
नहीं पिता जी जब होते थे छुप के बैठते थे जाकर
लगी जहाँ दीवार घड़ी थी वह दीवार न भूले हम
पल-पल जिस पर नज़र गड़ी थी घड़ी वो कैसे भूलें हम
जीवन चक्र हमारा सारा उसी घड़ी से चलता था
उसे देख सूरज उगता था उसे देख कर ढलता था
सोने के कमरे में रात को ख़ूब धमाल मचाते थे
सोने से पहले बिस्तर को प्रेम से ख़ूब बिछाते थे
अक्सर अम्मा हमें सुनाती थी परियों की कहानी
कभी भूत की कथा सुनाते थे दादा और दादी
लोक कथा रामायण महाभारत दादा हमें सुनाते थे
सुनते सुनते भाई बहन हम जादू में बँध जाते थे
दादी का जब प्यार उमड़ता हमें सुनाती थी लोरी
हम कहते हम बड़े हो गये कहती थी सो जा छोरी
सबसे न्यारी एक जगह थी, मेरी अम्मा की रसोई
जिसकी यादें मेरे मन से पल भर को न खोई
जाने कहाँ खो गये वो दिन खोया मुँह का स्वाद
खाने का रस कहाँ गया मेरी अम्मा के बाद
याद अभी तक मुझको आते हैं रसोई के बर्तन

भूख हमारी बढ़ जाती थी सुनकर जिनकी खन-खन
एक जगह सबसे प्यारी थी मेरे घर का पूजाघर
जहाँ रोज़ गाते थे हम सब आओ गिरधर.. आओ गिरधर..

एक-एक कोना उस घर का
आँखों के सम्मुख है आता
कहाँ थे जूते रखे जाते
कहाँ घड़ा था रखा जाता
टँगी जहाँ दादी की फ़ोटो
कील कहाँ पर गड़ी हुई
वो कोना भी दिखे जहाँ
पापा की छड़ी थी खड़ी हुई
घर के पीछे के आँगन में
बँधी रहती थीं गौ माता
बड़े प्यार से गौ माता से
सबने बाँधा पक्का नाता
दूध पिया जो अमृत जैसा
याद आज भी सबको आता
दिल दिमाग़ के हर कोने में
जो स्मृति हो गई अमर
दाता दे दो दान मुझे
बचपन का वो अम्मा का घर

❄❄❄